अ

बाल-शिक्षा

भाग-दो

लेखक ---

राष्ट्रगुरु श्री सदाफल देव जी महाराज

---::-0::---

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण

५०००

सदाफलाब्द १०७

भाद्रपद कृ.४, सम्वत् २०५१ (वि.)

सहयोग -- राशि : रुपये २१/-- मात्र

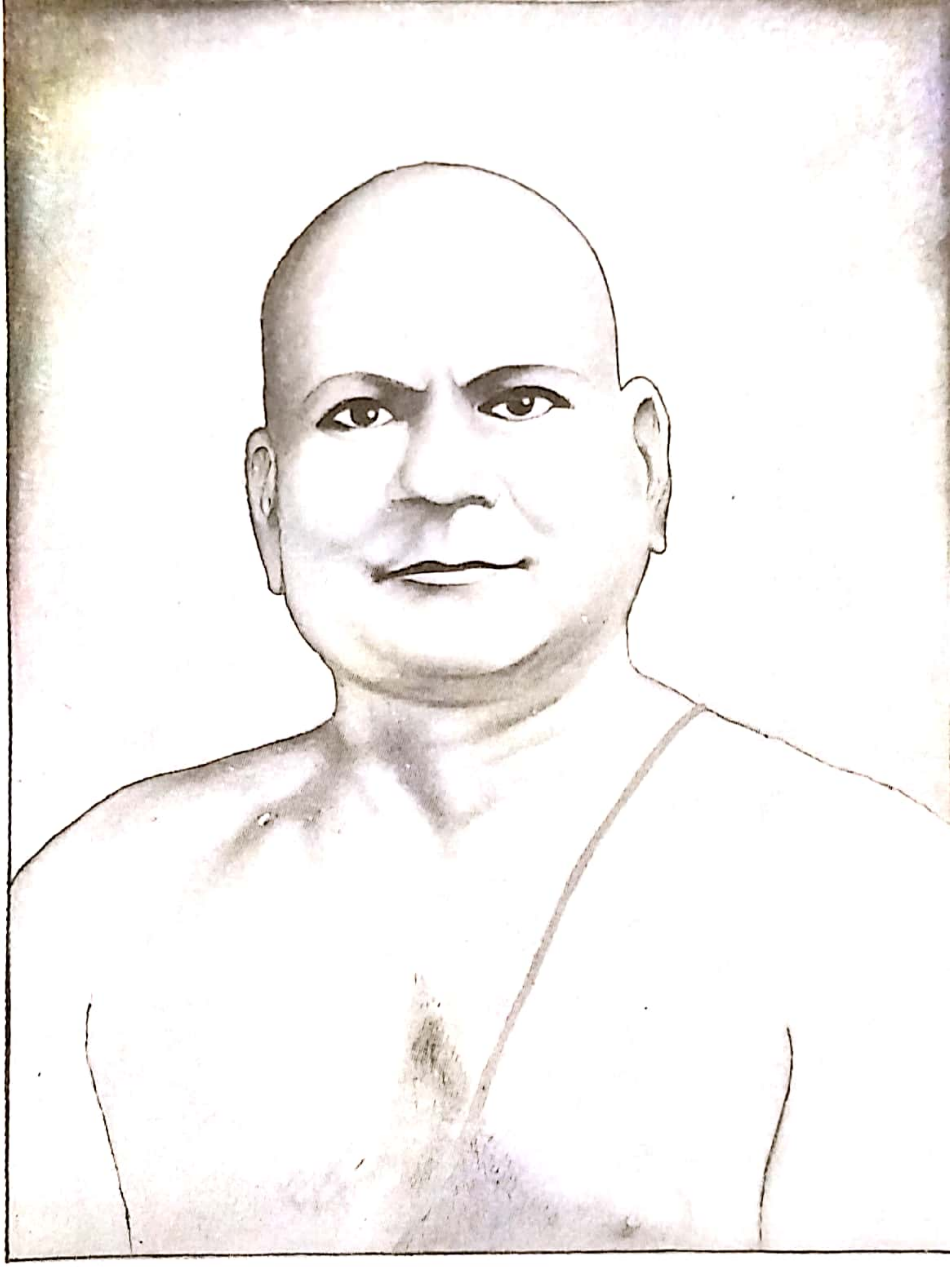

अनन्त श्री सद्गुरु सदाफल देव जी महाराज

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

प्रथम पाठ

१--- प्रभु वन्दना

२--- गुरु, परमगुरु, विद्यागुरु, गुरुसेवा

३--- अविद्या, गुरुविमुख

४--- विद्या अध्ययन करने का लक्ष्य शरीरस्थ अक्षय निधि को प्राप्त करना है और यही शिक्षा है ।

५--- भौतिक विज्ञान

६--- चेतन विज्ञान

७---- जड़ चेतन सत्ता

८---- मन-काल्पनिक सृष्टि

९---- ईश्वरीय सृष्टि

प्रथम पाठ समाप्त

------ o ------

द्वितीय पाठ प्रारम्भ

१--- पुरुषार्थ

२--- उत्तम जीवन

Scanned with CamScanner

३--- विश्व बन्धुत्व

४--- राज सत्ता ईश्वरीय है।

५--- अंग्रेजी भाषा

६--- हिन्दी भाषा

७--- संस्कृत विद्या

८---- सर्व राष्ट्रों की भाषा

९---- राजनीति

१०--- धर्म-विनाश

११--- सम्प्रदाय

द्वितीय पाठ समाप्त

------ ० ------

तृतीत पाठ प्रारम्भ

१--- राष्ट्र-संस्कृति

२--- युग-परिवर्तन

३--- समाज

४--- बाल-बालिका जीवन

५--- जाति मीसांसा

६--- भोजन तथा शौच

Scanned with CamScanner

७--- मित्र से लाभ

८--- उत्थान का प्रथम साधन :-- ब्रह्मचर्य

९--- सत्य, दया, शील

१०--- स्वर्वेद, बीजक तथा वेदों का महत्त्व

११--- ऋषि जीवन दर्शन

तृतीय पाठ समाप्त

------ ० ------

चतुर्थ पाठ प्रारम्भ

१--- भारतीय सभ्यता। भारत सदैव विश्व-गुरु रहा है और रहेगा।

२--- उच्च गौरव, विदेश का अनुगामी

३--- विवेकसम्पन्न विवाह से लाभ

४--- पूर्ण विद्वान् कैसे होंगे ?

५--- विद्या अन्तर उतरती है, केवल पुस्तक पढ़ना विद्या नहीं है ।

६--- हृदय और मस्तिष्क को एक में सीकर साथ ले चलो ।

Scanned with CamScanner

७--- धर्मज्ञ बनें, तत्त्वज्ञ बनें, लोकप्रिय बनें।

८--- ऋषि, मुनि तथा योगी बनें।

चतुर्थ पाठ समाप्त

---- ० ----

पञ्चम पाठ प्रारम्भ

१--- विद्या अवतरित रूप सज्ञन विद्वान् है

२--- उपकार उत्तम गुण है, निन्दा न करें।

३--- वीतरागी पुरुष धन्य है

४--- अध्यात्म विद्या के द्वारा ही कोई भी कर्म क्षेत्र में सकु शल तथा दक्ष हो सकता है ।

५--- परिपक्व सिद्धान्त अटल तथा गौण कर्त्तव्य

६--- विवेक-धैर्य-शान्ति से सब काम करें

७--- कर्मयोग, ज्ञानयोग

८--- स्वावलम्बन

९--- आत्म-स्वाभिमान

१०--- देश-सेवा, विश्व - सेवा

Scanned with CamScanner

११-उत्तम मृत्यु

पञ्चम पाठ समाप्त

----- ० -----

षष्ठ पाठ प्रारम्भ

१--- आत्मबल संयम

२--- बौद्धिक बल संयम

३--- मानसिक बल संयम

४--- दैहिक बल संयम

५--- विविध कल्प

६--- मुण्डी संयम

७--- चक्षु का व्यायाम

८--- सूर्य्य संयम

९--- प्राणायाम

१०--- कपालभाती

११--- मूल बंध

१२--- विपरीत करणी मुद्रा

१३--- ब्रह्मचिन्तन, ब्रह्म-प्राप्ति

षष्ठ पाठ समाप्त

----- ० -----

Scanned with CamScanner

अ

बाल शिक्षा दूसरा भाग
प्रथमः पाठः

१-- प्रभु-प्रार्थना

अनिर्वाच्य परम तत्त्व चेतन अनुभव विज्ञान सिद्ध, सच्चिदानन्द स्वरूप, अनन्त सत्तासम्पन्न, निःशब्द मेरा इष्ट देव हैं। वही आराध्य देव भगवान् मुझे प्रकाश दें।

२-- गुरु, परमगुरु, विद्यागुरु, गुरु-सेवा।

भौतिक विद्याओं के शिक्षक गुरु हैं। जैसे पंचभूत विद्या, देव विद्या, दैव विद्या, क्षात्र विद्या, नक्षत्र विद्या, धनुर्विद्या, नीति विद्या एवं अपरा विद्या के शिक्षक गुरु हैं और विविध भाषाओं को सिखलाने वाले भी साधारण गुरु हैं। अध्यात्म विद्या के उपदेशक परम गुरु हैं, जो गुरु अध्यात्म विद्या के उपदेश देकर विरही अनुरागी- अधिकारी जीवों को परब्रह्म की प्राप्ति करा, जीवन्मुक्ति देते हैं, जो भगवान् के स्वरूप हैं, भगवान् हैं।

शिष्यों के लिये भौतिक गुरु भी आदरणीय हैं। सत्कार करने योग्य हैं एवं परम गुरु पूजनीय, आराध्य देव हैं। शिष्य सद्गुरु को ईश्वर के रूप में देखते हैं और पूजन करते हैं। परा, अपरा दो प्रकार की विद्यायें होती हैं। भौतिक संसार की समस्त विद्यायें, अपरा

Scanned with CamScanner

विद्यायें हैं और जिस विद्या द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति होती है, उसको परा विद्या कहते हैं एवं अक्षर और परम अक्षर जिससे गम्य हो, वह परा विद्या है। सेवा कर गुरु से प्राप्त की हुई विद्या उत्तम, सफलीभूत होती है। अर्थात् उस विद्या के जो उद्देश्य हैं, वे सभी पूर्ण होते हैं अन्यथा सब पढ़ी हुई विद्यायें व्यर्थ, निष्फल हो जाती हैं। इसीलिये विवेकी जन गुरु सेवा सम्पन्न होकर गुरु-शिष्य भाव में सब विद्याओं को प्राप्त करते हैं और उस विद्या से अपने जीवन में लाभ उठाते हैं और अपने जीवन को महान् बनाने के लिये प्रयत्नशील होते हैं। अतः गुरु-सेवा के साथ विद्यायें प्राप्त करें। सेवाहीन विद्या,विद्या नहीं है और सभ्यता अर्थ से नहीं है।

३-- अविद्या, गुरुविमुख।

नित्य में अनित्य, अनित्य में नित्य, जड़ में चेतन, चेतन में जड़, शुचि में अशुचि,अशुचि में शुचि जानना और मानना अविद्या है। जिस व्यवहार से आस्तिकता हो, उदण्डता, आसुरी बुद्धि प्रकट हो, मद्य, मांस-अण्डा, राक्षसी भोजन प्रिय हो, धर्म-मर्यादा की अवहेलना हो, वह पठन अविद्या है। वह विद्या नहीं है। वह जीवन नष्ट करने के लिये विष है। इसलिये विवेकी जन ऐसी, निम्न अधम शिक्षा से बचकर रहते हैं और अपने नर-जीवन को सम्हार कर ले चलते हैं।

पराविद्या के गुरुविमुख होने वाला कृतघ्नी, महापापी होता है और वह चौरासी लक्ष योनि का अधिकारी होता है। वह गुरु-विमुखी जन्म-मरण के कालचक्र से नहीं छूट सकता। इसके लिये कोई उपाय नहीं है।

Scanned with CamScanner

अपराविद्या वाले गुरु भी आदरणीय, माननीय हैं। वह सत्कार के योग्य हैं। यह उत्तम सत्य शिक्षा पाठकों के लिये है। इस पर ध्यान देंगे।

४-- विद्या अध्ययन करने का लक्ष्य शरीरस्थ अक्षय निधि की प्राप्ति करना है और यही शिक्षा है।

आत्मा चेतन है। इसमें अपार शक्ति भरी हुई है। शुद्ध आत्मबल प्राकृत आवरणों से दबा हुआ है। वह शुद्ध आत्मबल उदय होने से आत्मा में अनन्त की कल्पना होने लगती है। वह शुद्ध आत्मबल अध्यात्म विद्या के प्रकाश में योगाभ्यास द्वारा उदय होता है। उसके लिये अन्य उपाय नहीं है। इस शरीर में अनेक विभूतियों की भूमि है। गुरु विधान से उनमें संयम करने से अनेक प्रकार की विभूतियाँ प्रगट होती हैं। वह योगी के लिये तुच्छ, अनित्य माया है। उसको पूर्ण योगी नहीं चाहंते हैं, न उनकी प्राप्ति के लिये संयम करते हैं। योग दर्शन पर मेरा भाष्य पढ़ें। सब बात मालूम होगी।

विद्या से अविद्या नष्ट होकर प्रभु-प्राप्ति होती है और सब मन-वांछित भोग मिलतेऔर विद्या से अमृत निर्वाण पद प्राप्त होता है। अपरा विद्या की शिक्षा से भी संसारी अनेक लाभ होते हैं। इसलिये प्रकृति मण्डल के भी ज्ञान-विज्ञान को अर्थात् भौतिक विज्ञान को भी प्राप्त करें।

वास्तव में चेतन विज्ञान सर्वश्रेष्ठ आत्म, परमात्म साक्षात्कार के लिये विद्या है एवं अनुभव चेतन विज्ञान से ब्रह्म की उपलब्धि होती

Scanned with CamScanner

है, भौतिक यंत्रों द्वारा ब्रह्म-साक्षात्कार की इच्छा बाल-विवेक, लड़कपना, अज्ञान है। इसलिये ब्रह्म - उपलब्धि के लिये आध्यात्मिक साधन में प्रयत्नशील बनें।

५-- भौतिक विज्ञान

पंच भूतों का विज्ञान अर्थात् आकाश, वायु, अग्नि, जल,पृथिवी, इन पाँच तत्त्वों का विज्ञान। पंच भूतों के संयमी योगी पञ्चभूत विजयी होते हैं एवं पंच भूतों पर उनका अधिकार होता है। उनसे वे काम लेते हैं। और उनके अधिकार में, उनके शासन में पाँचो तत्त्व रहते हैं। वह व्यक्तित्व संसारी मनुष्यों के लिये अति दुर्लभ वा अलभ्य है।

दूसरे साधारण विज्ञान साधारण मनुष्यों में होते हैं। विद्युत, रेल, तार, रेडियो, व्योमयान आदि हैं एवं अणु बम, एटम बम, जहरीली गैस आदि आसुरी विज्ञान निम्न कोटि के मनुष्यों में होते हैं। वे ही आविष्कार करते हैं। मनुष्यत्व गुणसम्पन्न पुरुष ऐसा नहीं करते। यंत्रों द्वारा जल का अन्वेषण तथा वायु का अन्वेषण, इनका मिश्रण-पृथक करण साधारण यंत्र बुद्धिमूलक है। भौतिक बुद्धि निर्मित यंत्रों द्वारा भौतिक पदार्थ देखे, जाने जाते हैं और भौतिक विज्ञान प्राकृत सीमाबद्ध है। वे बाहर नहीं जा सकते हैं। न उनको बाहर का ज्ञान ही है। चेतन सत्ता के देखने-जानने के लिये भौतिक विज्ञान अन्धा है और असमर्थ है। भौतिक विज्ञानी अपने यंत्रों से देखी हुई सत्ता को परमाणु समझते हैं, सो बात नहीं है। वह परमाणु नहीं है, बल्कि वह प्रकृति का एक छोटा रूप है। वास्तविक परमाणु यंत्रों से

Scanned with CamScanner

नहीं देखा जाता। उस परमाणु को योगि जन अपनी विशुद्ध प्रतिभा द्वारा देखते हैं। साक्षात्कार करते हैं। कार्य को कारण में विलीन करते हैं। तत्त्वार्थ यही है – मूल परमाणु भौतिक यंत्रों द्वारा नहीं देखे जाते।

६--- चेतन विज्ञान

किसी क्षेत्र या किसी विद्या के विद्यार्थी आत्म तथा परमात्म विषयों पर किसी भी अध्यात्मवेत्ता से वाद-प्रतिवाद वा तर्क-वितर्क कदापि न करें, क्योंकि यह तुम्हारा विषय नहीं है। मन-बुद्धि-वाणी अगम्य विषय ब्रह्म तत्त्व तर्क-वितर्क का विषय नहीं है। इस विषय में तर्क की अप्रतिष्ठा है, क्योंकि तर्क बुद्धिमूलक प्राकृतिक है और ब्रह्म-सत्ता प्रकृति पार मन-बुद्धि-वाणी- अगोचर, अगम्य विषय है। यह तर्क में नहीं आ सकता है। जो तर्क से चेतन सत्ता को सिद्ध करना चाहते हैं, वे दुधमुखी, अबोध बालक हैं। वे इस विषय में कुछ नहीं जानते। इसलिये आप चेतन विषयों में तर्क-वितर्क करके अज्ञानी, नासमझ न बनें। आप अभी विद्या पढ़ें, अपने में योग्यता लावें। इसी में आपका कल्याण है। अध्यात्म-प्रकाश से सम्पन्न ब्रह्मवेत्ता आपके लिये यह उचित है तथा आपका अटल नियम है कि आप अनधिकारी के प्रश्नों का उत्तर न दें। अध्यात्म विषयों पर तर्क-वितर्क करने वालों से उनको अज्ञानी, विमूढ़ समझकर उनसे मौन रहें, उनके मूर्खतापूर्ण प्रश्नों के उत्तर न दें, क्योंकि ब्रह्म-तत्त्व तर्क-वितर्क का विषय नहीं है। इस विषय पर तर्क-वितर्क करना मूर्खता है। यह साधन-अनुभव गम्यविषय

Scanned with CamScanner

है। अतः अध्यात्म क्षेत्र परिपूर्ण ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मानन्द में शान्त रहें। बालकों के प्रश्नों का उत्तर न दें और अधिकारियों को उपदेश करें।

भौतिक विज्ञान से ईश्वर सिद्ध नहीं होता, यह प्रमाद अबोध बाल-वचन है, क्योंकि अनिर्वाच्य ब्रह्म तत्त्व चेतन विज्ञान, अनुभव-साधन सिद्ध है और प्रत्यक्ष साक्षात्कार है। अध्यात्म विद्या के प्रकाश में अन्तरङ्ग योग चेतन साधन द्वारा आत्म तथा परमात्म अनुभव, साक्षात्कार होता है। उसको योगिजन देखते, जानते हैं एवं चेतन विज्ञान द्वारा ब्रह्म प्राप्त होता है, भौतिक विज्ञान से नहीं। भौतिक विज्ञान जड़,अन्धा है। उसकी गति वहाँ नहीं है।

७--- जड़-चेतन सत्ता

जड़-चेतन अलग-अलग दो प्रकार की सत्ता होती है। प्रकृति जड़ है। प्रकृति की विकृति पञ्चभूत सब जड़ है। जड़ प्रकृति के कार्य नाम-रूप-व्यक्त जगत् सर्व जड़ ही है। जड़ का ही उत्पत्ति तथा विनाश है। जड़ परमाणु ही अनेक रूप में परिणत होकर अनेक रूपों को धारण करते हैं। जिसका विभाग न हो सके, वह जड़ परमाणु है। परमाणु नित्य है। नये-नये परमाणु नहीं बनते। परमाणु बनते-बिगड़ते हैं, ऐसा समझते हैं, वे अज्ञान भ्रम में हैं, तत्त्व-दर्शी नहीं हैं। प्रकृति स्वयं चेतन नहीं है। प्रकृति में स्वयं क्रिया नहीं है,न किसी प्रकार क्रिया हो सकती है। प्रकृति में द्वन्द्वात्मक विरोधी समागम और प्रतिषेध का प्रतिषेध, यह शब्द तत्त्व-शून्य नास्तिकों का विकल्प है। वस्तु कुछ नहीं है। गुणात्मक परिवर्तन से चेतना आती है, यह कहना तथा समझना अबोध,अज्ञान है, मन की कल्पना है। वास्तव में कुछ

Scanned with CamScanner

नहीं है, वह सर्व जगत् को अन्धकार में ले जाने के लिये नास्तिकों की भ्रम लीला है। इस भ्रम में विवेकी विद्यार्थी कदापि न पड़ेंगे। जड़ प्रकृति है। जड़ प्रकृति का कार्य जगत् है। चेतन सत्ता में नित्य अनादि सद्गुरु, बहु आत्माएँ तथा अक्षर और परम अक्षर है। यह सर्व पदार्थ चेतन सत्ता अनुभव विज्ञानसिद्ध है और वे अनुभूति-तत्त्व हैं। यहाँ मन की कल्पना का स्थान नहीं है। यह सब समाधिस्थ योगियों का विषय है। वाचक ज्ञानियों का आसुरी कुतर्क, कुचाल नहीं है।

८-- मन-काल्पनिक सृष्टि

किसी व्यक्ति के विचार सिद्धान्त निर्णय करने के लिये सबसे पहले उसका कुल, जन्म-भूमि, देश, जल-वायु, संसर्ग, आहार-विहार, भोजन-छाजन, रहन-सहन आदि की जानकारी कर लेना अति आवश्यक है, क्योंकि उक्त सब कारणों का प्रभाव जीवन पर खूब-खूब पड़ता है एवं उसी के अनुकूल उसका जीवन बनता है। तमरंजन सिंह कहते हैं कि वृषनन्दन शास्त्री १४ भाषा के विद्वान् हैं और सब देशों में घूमे हैं। बहुत बड़ा आदमी हैं। मैंने पूछा-- वह मद्य - मांस भक्षण करते हैं ? वह सुअर का चोखा, सब अण्डा भक्षण करते हैं ? वह स्वतंत्र स्त्री से विवाह किये हैं वा नहीं ? उत्तर मिला -- वह सब कुछ खाते हैं। उनका विवाह भी स्वतंत्र है। अब क्या पूछना है, क्या जानना है ? मनुष्य जैसा अन्न-जल सेवन करता है, उसी के अनुकूल उसकी बुद्धि तथा उसका हृदय होता है। मद्य-मांस-अण्डा-चोखा खाने वाले की बुद्धि परमार्थ, अध्यात्म भावों के विचार योग्य नहीं होती।

Scanned with CamScanner

उसकी बुद्धि घोर तामस में बनती है। उसका विवेक तामस मण्डल का होता है। उसकी बुद्धि की धारा तमोगुण क्षेत्र में प्रवाहित होती है। वह जो कुछ कहेगा, अपनी तमो-वृत्ति में ही निम्न भूमि से कहेगा। उसको रज, सत्त्व का ज्ञान नहीं है, न उन विषयों पर कह ही सकता है। तम में रज मिला होगा, तो तम-रज मिश्रित बुद्धि की धारा चलेगी। उसी में कुछ कहेगा। वह निम्न कोटि का व्यक्ति परमार्थ और अध्यात्म विषयों पर और सत्य सिद्धान्त, सन्मार्ग पर कुछ भी नहीं कह सकता है। उसकी पढ़ाई-गुनाई सर्व विद्यायें भी वैसी ही हैं। वह व्यक्ति सत्य, शुद्ध सृष्टि का स्वरूप तथा कारण-कार्य निरूपण नहीं कर सकता। जो कुछ कहेगा वह असत्य, अनर्थकारक होगा। संसार के लिये दुख का मार्ग होगा।

ऋषि, मुनि अन्न, दूध, फल-फूल औषधियें भोजन करते हैं। उससे रक्त-रस-वीर्य्य बनता है। उसी से उनका शरीर है। उनका जीवन तपोज्ञानमय है। उनका शरीर, मन, बुद्धि आत्मा विशुद्ध है। चमकीले पदार्थों पर सूर्य्य का प्रकाश पूर्ण रूप से पड़ता है। अशुद्ध, मलीन पदार्थ तथा कोयला आदि पर नहीं पड़ता। इसी प्रकार मलीन व्यक्ति का ज्ञान-उपदेश भी मलीन है, वा असत्य, भ्रमजनक होता है। लक्षण प्रमाणों से वस्तु की सिद्धि होती है, केवल कथन मात्र से नहीं।

प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द – ये चार प्रमाण होते हैं। जहाँ पर तीन प्रमाण नहीं लगते, वहाँ पर चौथा शब्द प्रमाण प्रकाश करता है। वहाँ पर शब्द प्रमाण से पदार्थ माने जाते हैं एवं वहाँ पर शब्द प्रमाण से ही सत्य सिद्धान्त समझा जाता है। आप्त पुरुष के वचन उपदेश ही शब्द प्रमाण हैं। सद्गुरु तथा समाधिस्थ

Scanned with CamScanner

योगी को आप्त कहते हैं। आप्त पुरुष के सामने सभी तत्त्व एवं सभी पदार्थ प्रत्यक्ष रहते हैं। इसीलिये आप्त वचन शब्द प्रमाण है। शब्द प्रमाण से परे कोई प्रमाण नहीं है। वह आप्त पुरूष दुर्लभ और धन्य है।

सृष्टि आरम्भ काल में जल था। जल से कृमि उत्पन्न हुए। पीछे बड़े कारणों से जीव उत्पन्न हुए। ऐसे विकास होते हुए बहुत दिनों में बन्दर बन गये। पुनः बन्दर से बनमानुष बन गये। फिर बनमानुष से विकास होकर बहुत दिनों में मनुष्य बन गये। बन्दर में एक पूँछ अधिक थी। वह बहुत दिनों में घसीटते-घसीटते पूँछ टूट गयी। बन्दर खड़ा हो गया, फिर मनुष्य बन गया। दुख है! चेतन सत्ता का दर्शन किया नहीं। दार्शनिक अब कैसे बन गये ? संसार में ऐसे व्यक्ति भी संसार का गुरु मार्ग प्रदर्शक बनने के लिये तैयार हैं। उनके पीछे कितने लोग चलते हैं और चलने के लिये प्रयास कर रहे हैं। यह दुख है और संसार की यह नैतिक दशा, अन्धकारमय पतन अवस्था है। देखें, यह निम्न नीति संसार को किस स्थान पर ले जाकर छोड़ती है एवं यह पवित्र होकर, कब सुधरते हैं और अपने सत्यमार्ग पर आते हैं ? यही मन-काल्पनिक सृष्टि है। यही विचारशील व्यक्ति जगत् के आचार्य हैं। इनके पीछे चलने वाले इनके अनुयायी किस अवस्था को प्राप्त होंगे, हो रहे हैं ? विश्व का मार्ग प्रदर्शक ऋषि-मुनि एवं योगी होते हैं वा होते आये हैं और फिर होंगे।. तब विश्व का कल्याण होगा और संसार सुख-शान्ति के स्थान पर विश्राम पावेगा, अन्यथा नहीं।

६---- ईश्वरीय सृष्टि

Scanned with CamScanner

यह अनादि स्वयं भू ज्ञान है, किसी सम्प्रदाय का नहीं है। यह अध्यात्म क्षेत्र से है। सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञ, जगन्नियन्ता, जगदीश्वररचित चेतन सूचक सृष्टि अनन्त ईश्वरीय गुणों से विभूषित है। इसको अध्यात्मवेत्ता अपनी ज्ञान-दृष्टि से देखते हैं और समझते हैं, क्योंकि ईश्वर सर्वभूतों में, सर्व लोकों में तथा सर्व ठामों में परिपूर्ण,सर्वव्याप्त है। उसके विभुत्व वा व्यापकत्व से कोई पदार्थ तथा कोई स्थान खाली नहीं हैं। समस्त जगत् में वह ओत-प्रोत व्यापक अपनी दिव्य सत्ता से प्रकाशमान है। शासन यन्त्र का संचालक अपने विशेष स्थान पर अधिष्ठित रहकर देहयंत्र का संचालन करता है। इसी प्रकार अपनी अनन्त सत्ता सम्पन्न रहकर अनन्त ब्रह्माण्ड का संचालन करता है, क्योंकि भगवान् सत्ता से अनन्त, गुणों से अनन्त और कर्मों से अनन्त है। अक्षर चेतन आत्मा द्वारा त्रिगुणात्मिक प्रकृति अर्थात् परमाणुओं के परिमाम योग से सृष्टि का क्षेत्र रूप आकाश महामण्डल उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई। ये ही प्राकृत पंचभूत कहे जाते हैं। इन्हीं पंचतत्त्वों से सृष्टि की रचना सर्व शक्तिमान परमेश्वर करते हैं। सूर्य्य, चन्द्र आदि नव ग्रह मिलकर ऊपर द्यौ और नीचे पृथ्वी की सीमा में यह सृष्टि निर्माण होकर, धारण, संचालन होती है। इस विशाल सृष्टि का रचयिता - संचालक भगवान् हैं। इस चेतन सूचक सृष्टि में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि सभी नव ग्रह अपने अटल नियमों द्वारा यन्त्र की नाई गमन करते हैं और अपने कार्य्यों में कुशल, दक्ष रहते हैं। यह तो ब्रह्माण्ड की रचना है। अब पिण्ड सृष्टि की रचना का वर्णन करते हैं।

संसार रूप वृक्ष का ऊर्ध्व मूल है और अधः साखा है। पूरण पुरुष परमात्मा से एवं सृष्टि के केन्द्र स्थान से दो धार अधः को

Scanned with CamScanner

प्रवाहित होती है। एक प्राकृतिक धार और दूसरा शाब्दिक धार विकास के रूप में चलती हैं। नित्य मूल प्रकृति अर्थात् परमाणुओं से महातत्त्व, बुद्धि, अंहकार, चित्त, दश प्राण, दश इन्द्रियाँ ये चौबीस पदार्थ प्रकृति से निर्मित हुए। मन की योनि अक्षर है। मन प्राकृतिक नहीं है। ये २५ तत्त्व पिण्ड में हुए। कूटस्थ अक्षर से पाँच नादों की उत्पत्ति हुई, जो सिर के मण्डलों में प्रकाशमान हुए। कपाल में पाँच नादों का पृथक-पृथक मण्डल है, जिनके आधार, प्रकाश में मस्तिष्क का समस्त कार्य एवं पञ्च ज्ञानेन्द्रियों के कार्य सब होते हैं। अथर्ववेद में इन्हीं को पञ्च ब्रह्म कहा गया है। बोल जब, दन्त, कंठ, मुर्द्धा आदि स्थानों पर आता है, तब स्वर, व्यञ्जन सर्व वर्ण-क्षर प्रगट होते हैं, जिनमें संसार के सर्व व्यवहार होते हैं। इसी क्षर में सर्व भाषा तथा सर्व विद्याएँ पड़ी हुई हैं। सभी भूत क्षर ही हैं। क्षर रूप संसार है। यह शाब्दिक सृष्टि का विवरण है। आप विशेष जानकारी के लिये मेरे स्वर्वेद आदि सद्ग्रन्थों को पढ़ें।

यही दो प्रकार की पिण्डी सृष्टि है, जो अपने क्षेत्र में उत्पन्न होती है। इस विशाल जगत् का निर्माण करने वाला सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म है, उसी अनिर्वाच्य, परमतत्त्व, अनन्त सत्तासम्पन्न निःशब्द से यह सुन्दर, अति मनोहर चेतन सूचक सृष्टि बनती है, इसका रचयिता दयालु भगवान् है। वही बनाता है, धारण करता है और अन्त में लय कर लेता है। इसलिये संसार का पिता भगवान् को हम लोग सब कोई प्रेम से निरन्तर भजें, सुमिरण करें। इसी में कल्याण है।

।। इति बाल शिक्षा दूसरा भाग प्रथम पाठ समाप्त।।

Scanned with CamScanner

द्वितीयः पाठः प्रारम्भः

१--- पुरुषार्थ

पुरुषार्थ से ईश्वर की प्राप्ति होती है। पुरुषार्थ से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है। पुरुषार्थ से पूर्ण विद्या प्राप्त होती है और सद्गुण सम्पन्न पूर्ण विद्वान् होता है। नर से देव होता है। पुरुषार्थ से राष्ट्र स्वतंत्र होता है और विश्व पर विजयी होता है। पुरुषार्थ से सारे प्राणियों को अपना मित्र बना लेता है। पुरूषार्थ से विश्व में बन्धुत्व भाव प्रगट हो जाता है। मनुष्य पुरुषार्थ द्वारा सर्व प्राप्ति कर सकता है तथा सब कुछ कर सकता है। अतः पुरुषार्थ ही जीवन है एवं पुरुषार्थ में ही जीवन है। और पुरुषार्थ ही जीवन में सार है। इसलिये सबको पुरुषार्थ करना चाहिये।

२---उत्तम जीवन

आध्यात्मिक जीवन उत्तम है। धार्मिक जीवन तथा परोपकारी जीवन एवं राष्ट्र की तथा विश्व की सेवा करना और सन्त-समागम का जीवन उत्तम है। अपनी आत्म चेतना को सर्व समेट कर, शुद्ध स्वरूप से निःशब्द में लगा देना सर्वोत्तम जीवन है। शब्दभेदी योगी धन्य है। जिस जीवन में सबको सुख-शान्ति की प्राप्ति हो, वह उत्तम जीवन है। नास्तिक जीवन अधम जीवन है, क्योंकि

Scanned with CamScanner

नास्तिक से जग-जीवों का पतन होता है, संसार अन्धकार में जाता है, सबको दुख होता है। अतः तुम नास्तिक बनने से बचो। नास्तिक के दिल-दिमाग में चेतन प्रकाश न मिलने से वह शुष्क, बेरस का हो जाता और उसकी वाणी, व्यवहार, रहन-सहन शैतान की हो जाती है। अतः तुम उससे बचो।

३--- विश्व-बन्धुत्व भाव

एक कहता है कि विश्व के सब मनुष्य मनुष्य हैं। सब एक भाई हैं। सब भाई-भाई-भाव में मिलकर रहें। दूसरा कहता है सबका पिता एक ईश्वर है। सब ईश्वर के जीव हैं। सब एक ईश्वर की सन्तान होने से सब एक भाई हैं। इसलिये सब एक में मिलकर विश्व-बन्धुत्व भाव से रहें।

तीसरा विश्व-बन्धुत्व भाव का साधन बतलाता है कि भेद-भाव मिटा कर सबको एक समान समझे। सब एक साथ में भोजन करें, सब एक पात्र में भोजन करें तथा एक गिलास से सभी लोग जल पीवें। सब छुआछूत का भूत हटा दें। इन साधनों के द्वारा एकता होगी और सब में विश्व-बन्धुत्व का भाव प्रगट होगा। इसमें विश्व शान्ति से रहेगा और सबका कल्याण होगा इस पर विचार :-

पति-पत्नी का सम्बन्ध तथा प्रेम अनुपम है। पत्नी अपने पति को विष दे देती है। पत्नी अपने पति को कत्ल करवा देती है और पति अपनी पत्नी को अपने हाथों से कत्ल कर देता है। विभीषण-रावण का भ्रातृ-स्नेह, बालि-सुग्रीव का भ्रातृ-स्नेह,

Scanned with CamScanner

कौरव-पाण्डवों का भ्रातृ-स्नेह विश्व में प्रसिद्ध है। नैतिक सन्त श्री गांधी ज़ी हिन्दू-मुसलमान की एकता जीवन भर करते रह गये, बल्कि इसी कारण उनकी मृत्यु भी हो गयी। किन्तु एकता नहीं हो सकी। एक लाख हिन्दू, पाँच लाख मुसलमानों का नाश हुआ। उसी विश्व बन्धुत्व भाव का उपदेश करने के लिये एकान्त में कलम लेकर बैठा हुआ हूँ।

एक कहता है कि योगी बनो, दूसरा कहता है ब्रह्मचारी विद्वान् बनो, तीसरा कहता है विश्व बन्धुत्व भाव लेकर विश्व की सेवा करें। अब इस पर विचार यह है कि मात्र मुख से कहने से कोई योगी तथा विद्वान् बनेगा ? वा योगी विद्वान् बनने के लिये विशेष युक्ति, मर्म, साधन है, उसके द्वारा योगी वा विद्वान् बनेगा? सो उस सारतत्त्व का उपदेश मिलता नहीं, केवल बाहरी उपदेश सब लोग करते हैं। इससे अपना काम सिद्ध न होगा, न हो रहा है। इस प्रकार विशेषज्ञ पुरुषों की आवश्यकता है। मैं अनुभूत प्रत्यक्ष प्रमाण देता हूँ। मुझसे शेर, व्याघ्र, भयंकर नाग शत्रुता क्यों नहीं करते ? मेरे शून्य शिखर आश्रम पर हिमालय में ऐसे ही घूमते हैं। मैं शान्ति से ध्यान-समाधि करता हूँ। वे कुछ विघ्न नहीं करते। गुहाओं में सर्प आकर मेरे आसन के पास वा आसन के नीचे आकर बैठते हैं। कुछ भी अशान्ति नहीं करते। वृक्ष की रूखी (गिलहरी) वृक्षों से उतर कर मेरे पास आती हैं। वे मेरे पैर के अगूठों को प्रेम से जीभ निकालकर चाटती हैं। मुझे प्यार करती हैं। भय नहीं मानती। इसका क्या माने है ? मैं प्रभु के समस्त जीवों को प्रभु के जीव समझता हूँ, जानता हूँ। समस्त आत्माओं को अपने समान ही समझता हूँ और मानता हूँ। अपने में

Scanned with CamScanner

और जग- आत्माओं में मैं कुछ अन्तर नहीं समझता। केवल वाचक ज्ञान से नहीं, बल्कि अन्तर अनुभव- अनुभूत ज्ञान से सबको समान देखता हूँ। यह भाव केवल ग्रन्थ पढ़ने से तथा वाचक ज्ञान से नहीं हो सकता है, बल्कि अध्यात्म विद्या के प्रकाश में योगाभ्यास के द्वारा होता है और इस रहस्य को योगिजन जानते एवं समझते हैं, सर्व साधारण गुरुहीन नहीं। अध्यात्म विद्या के पञ्चम भूमि दिव्य अखण्ड समाधि में एवं विराज धाम पर पहुँचा हुआ योगी को एक ही अनन्त सत्ता देखने में आती है, एक ही निःशब्द सुनने में आता है। एक ही परम तत्त्व जानने में आता है, क्योंकि उस मण्डल में अन्य कोई पदार्थ नहीं है। एक ही देखता है, एक ही सुनता है, एक ही जानता है, यह अध्यात्म में भूमा का स्वरूप है। उस भूमि के नीचे शब्द आये हैं -- सर्व ब्रह्म है, नाना वस्तु कुछ नहीं है। इसी महान विषय को वाचक ज्ञानी, अद्वैतवादी कहते हैं -- नाम रूप दृश्य जो व्यक्त जगत है, यह सर्व ब्रह्म है, नाना अन्य वस्तु नहीं है।

इसी प्रकार वाचक ज्ञान में कोई कहे कि यह सर्व आत्माएँ एक हैं। वह ऐसा कहने से काम न चलेगा,तुम अपरोक्ष विज्ञान स्वरूप होकर उस भूमि से कहो कि यह सब आत्माएँ एक हैं, तब देखें क्या होता है। अध्यात्म विद्या के प्रकाश में योगाभ्यास द्वारा जब आत्म तथा परमात्म दोनों साक्षात्कार अनुभव अनुभूत होते हैं, तब सर्व आत्माएँ एक हैं, सर्व मनुष्य एक हैं, सारे जग-प्राणी एक हैं, यह भाव स्पष्ट उदय होता है। अन्यथा वाचक ज्ञान से नहीं होता। विश्व-बन्धुत्व भाव अध्यात्म क्षेत्र का विषय है, संसारी मनुष्यों का नहीं। इसलिये विश्व को एक सूत्र में बांधने के लिये और

विश्व-बन्धुत्व भाव प्रगट होने के लिये सब लोग अध्यात्म क्षेत्र में विचरण करें, अन्य कोई उपाय नहीं है, न हो सकता है।

अब प्रश्न है, क्या पृथ्वी के समस्त मानव ब्रह्म-ज्ञानी हो जायेंगे ? नहीं, नहीं। प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी के मनुष्य अध्यात्म के अधिकारी हैं। तृतीय श्रेणी के मनुष्य अल्प तत्त्व विषय को जानते हैं। चतुर्थ श्रेणी के मनुष्य बड़ों के पीछे चलने वाले होते हैं। इस प्रकार से समस्त संसार सन्मार्ग पर चलने लगता है। कोई अध्यात्म प्रकाश में योगाभ्यास करता है और निम्न कोटि के मनुष्य सेवा-सत्संग करते आगे बढ़ते हैं। इस विधान से संसार में एकता, विश्व-बन्धुत्व भाव आ जाता है। मेरे भाषण, उपदेश में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी आदि सभी आ बैठते हैं, भाषण सुनते है, दीक्षा-शिक्षा ग्रहण करते हैं। कोई मतभेद नहीं है, क्योंकि अध्यात्म क्षेत्र में सम्प्रदायियों की क्या आवश्कता है ? सूर्य के प्रकाश में दीपक की आवश्यकता नहीं पड़ती। एक ब्रह्म, एक ब्रह्मविद्या, ब्रह्मविद्या के उपदेशक एक सद्गुरु, एक धरातल, संसार में मनुष्य मात्र सर्व गुरु भाई, अब विवाद मतभेद कैसा ? सारा जगत में, सर्व स्थानों में विश्व बन्धुत्व भाव उदय हो जाता है। पृथ्वी के समस्त मनुष्य अध्यात्म प्रकाश में अपने जीवन को महान् बनाते हैं एवं नर से देव बनते हैं। यही आध्यात्मिक उत्तम उपदेश है। इसी में सबका कल्याण है और सब अध्यात्म-पथ के पथिक बनें और सब विश्व-बन्धुत्व भाव को लें।

४-- राजसत्ता ईश्वरीय है।

राज्य न प्रजातन्त्र है, न राजतंत्र है। यह दोनों कहने वाले भूल, अन्धकार में हैं। राजसत्ता ईश्वरीय है। ईश्वरत्व गुण सम्पन्न ही पुरुष राजपद पर बैठ कर शोभा पाते हैं और देश का कल्याण करते

Scanned with CamScanner

हैं। प्रजा को एवं संसार को ईश्वरीय नियम तथा आदेश पालन कराने के लिये ही राजा है। शासक राजा-प्रजा को उत्तम सन्मार्ग से ले चलते हैं, जिससे लोक तथा परलोक दोनों बनते हैं। आध्यात्मिक ईश्वरीय राज्य में प्रजा स्वर्ग सुख भोग कर अन्त में निर्वाण पद को प्राप्त करती है। यह आदर्श है।

५-- अंग्रेजी भाषा

अंग्रेजी भाषा अंग्रेजों की भाषा है। अर्थात् वह अंग्रेजों की बोली है। इसको अंग्रेज लोग बोलते हैं। अनेक देश तथा अनेक टापुओं पर कुछ दिन तक अंग्रेजों का अधिकार हो गया था। उस पर अंग्रेज लोग शासन करते थे। अनेक देश तथा अनेक टापुओं पर अंग्रेजों के शासन होने से अंग्रेजी भाषा का प्रचार होता गया। अंग्रेजी पढ़ने वालों को उच्च उच्च पद मिलने लगे। सब लोग नौकरी, श्वान वृत्ति के लिये अंग्रेजी पढ़ने लगे। उनकी इज्जत होने लगी। अंग्रेज ने छल, कपट, कूटनीति एवं धांधली, अंग्रेजी -पुस्तकों द्वारा फैलाने लगे। भोजन, छाजन, रहन-सहन सब अंग्रेजी भाषा के द्वारा अंग्रेजों के समान हो गया, जो भारतवर्ष से बिल्कुल विरुद्ध है और बहुत बुरा है, क्योंकि अंग्रेजी सभ्यता भारत में नहीं चाहिये। अंग्रेजी भाषा वा उर्दू भाषा अधूरी, अपूर्ण है, जिसमें हम अपना सर्व भाव व्यक्त नहीं कर सकते हैं। कलकत्ता से बम्बई तक अपना प्रचार है। देश में अंग्रेजी के बड़े से बड़े विद्वान् शिष्य हैं। मैनें कहा कि आप लोग मेरे ३५ ग्रन्थों में स्वर्वेद आदि को अंग्रेजी में अनुवाद कर लें। वे लोग नहीं कर सके। वे कहते हैं कि अंग्रेजी में यह विषय नहीं है, न यह शब्द

Scanned with CamScanner

है। अनुवाद नहीं होगा। ऐसी भाषा कोई भाषा है, जिसमें सब विषय न आ जायँ ? इसलिये यह अंग्रेजी भाषा अंग्रेजों में कुशल हो भारतीयों में बोलने-चालने के लिये थोड़ी अंग्रेजी चाहिये, किन्तु भारत की प्रधान भाषा अंग्रेजी नहीं है, न रहेगी, न अंग्रेजी पढ़ने वालों का उतना सम्मान होगा। उर्दू, अंग्रेजी में और के तौर समझा जाता है। राष्ट्र की भाषा, भारतीय भाषा देवनागरी है, शुद्ध हिन्दी है, जिसमें अध्यात्म विद्या तथा अन्यान्य विद्यायें भरी हुई हैं। भारत को अंग्रेजी पढ़ने से एक लाभ हुआ है। अंग्रजी पढ़कर भारत से अंग्रेज निकाले गये हैं। कांटा से कांटा निकाल कर दोनों को फेंक देते हैं। इसी प्रकार अब अंग्रेजी का वह गौरव नहीं है, जो पहले अंग्रेजी शासन में था। इसलिये हम लोग हिन्दी पढ़ें। हिन्दी पढ़कर विद्वान् होंगे, क्योंकि हिन्दी सर्वोच्च भाषा है और संस्कृत की विकृति है।

६--- आर्य भाषा

यह भारतवर्ष आर्यावर्त है। इस देश में आर्य लोग रहते थे वा रहते हैं। आर्यों का देश है। आर्यों की भाषा आर्य भाषा है। पूर्व के आर्य संस्कृत बोलते थे। उसी संस्कृत का अपभ्रंश, उसी की विकृति आर्य भाषा है, उसी को आज के आर्य लोग बोलते हैं, यही आर्य भाषा है, जिसमें भारत के विद्वान् अपना व्यवहार करते हैं, जो देश में प्रसिद्ध है।

हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान यह उपहार मुसलमान से मिला हुआ है। यह आर्यों का नहीं है। मैंने जिस भाषा में चार वेदों के आध्यात्मिक मंत्र-ऋचाओं पर भाष्य लिखा है, बीजक-भाष्य, योगदर्शन

पर भाष्य लिखा है, यही भाषा आर्य भाषा है। अध्यात्म क्षेत्र के विश्व-अद्वितीय ग्रन्थ 'स्वर्वेद' को मैंने जिस भाषा में लिखा है, यही भाषा आर्य भाषा है। मेरी ३५ पुस्तकें आर्य भाषा में हैं। जिस भाषा में विद्यायें नहीं हैं, उस भाषा को पढ़कर कोई विद्वान् नहीं हो सकता है। जिस भाषा में अनेक विद्यायें हैं एवं सर्व विद्यायें हैं, उस भाषा को पढ़ने से मनुष्य विद्वान् होते हैं और होंगे।

अध्यात्म विद्या सर्व विद्याओं में श्रेष्ठ राजविद्या है एवं सर्व विद्याओं की आत्मा है। वह अध्यात्म विद्या आर्य भाषा में ही अवतरित हुई है एवं आर्य शब्दों में प्रकाशमान है। इसलिये आर्य भाषा का विद्वान् ही पूर्ण विद्वान् हो सकते हैं, अंग्रेजी पढ़ने वाले तथा उर्दू पढ़ने वाले नहीं। आर्य भाषा जैसे बोलते हैं, वैसे ही लिखते हैं और जैसे लिखते हैं, वैसे ही पढ़ते वा समझते हैं। यह महत्त्व है। ऐसी भाषा कोई नहीं, आर्य भाषा विश्व को पढ़ना होगा। जो आर्य भाषा न पढ़ेगा, वह अध्यात्म विद्या का वेत्ता कैसे होगा ? क्योंकि आर्य भाषा में ही अध्यात्म विद्या प्रकाशमान है, अन्य भाषा में नहीं है। जो समझते हैं कि अन्य भाषा में भी है, वह अबोध बालक हैं, वह नहीं समझते हैं।

७--- संस्कृत विद्या

चारों वेद सर्व विद्याओं का एवं ज्ञानों का भण्डार है। वेद समस्त विश्व के लिये ज्ञान-विज्ञान का एक ही अद्वितीय ग्रन्थ है। जैसे सर्व नदियों के आश्रय स्थान एक ही सागर है, वैसे ही विश्व ज्ञान-विज्ञान का आश्रय स्थान एक ही वेद है। वेदों से बाहर कोई

Scanned with CamScanner

सत्य ज्ञान-विज्ञान नहीं है। सर्व का बीज, आधार चारों वेदों में है। यह तो रहा भौतिक विज्ञान। केवल सद्गुरु का ज्ञान अध्यात्म क्षेत्र के अधिक विषय ऐसे हैं, जो चारों वेदों में किसी सूक्त, मंत्र-ऋचाओं में मुझे नहीं मिले हैं। वह ज्ञान अनादि,शाश्वत संत मत में है। अभ्यासी संत जन साधन करते हैं। यह प्रत्यक्ष है। विवाद का विषय नहीं है। व्याकरण सर्व भाषाओं की जननी है। चारों वेद संस्कृत हैं, व्याकरण बद्ध हैं एवं व्याकरण का उद्देश्य वेदोद्धार है। दुख का सम्वाद यह रह गया कि आज आर्यावर्त में एक भी वेद का विद्वान् नहीं है। एक भी कोई व्याकरण का विद्वान् नहीं है। मेरी इस वाणी को सुनकर कितने लोग दुख मानेंगे, पर सत्य वचन तो स्पष्ट वक्ता कहते ही हैं। यही उचित, परम धर्म है। स्वरों के सहित वेदों को कण्ठस्थ कर लेना यह एक वेद पढ़ना हुआ, जैसा कि आज होता है। दूसरा वेद पढ़ना यह है कि वेदों के मंत्र-ऋचाओं को समझना, उनका अर्थ करना, भाष्य करना, तीसरा महान् तत्त्व यह है कि एक वेद है, दूसरा वेदों की विद्यायें हैं। वेदों में मानव जाति के हित तथा कल्याण के लिये भिन्न-भिन्न अनेक विद्यायें आई हुई हैं, जो मनुष्यों की आवश्यक चीजें हैं। वे मनुष्यों के काम में आती हैं। जैसे देव विद्या, दैव विद्या, युद्ध विद्या, धनुर्विद्या, भूगर्भ विद्या, नक्षत्र विद्या, नयविद्या, व्योमयान की विद्या आदि ६४ कला हैं। वह व्योमयान अपूर्व अलौकिक है। अभी नहीं निकला है। आज आर्य्यावर्त में वेदों के विद्वान् कहाँ हैं, कौन हैं?

कोई नहीं। वेदों के अर्थ तक नहीं जानते। वेदों पर सायणाचार्य का भाष्य है। यजुर्वेद पर उब्बट भाष्य है और विद्वानों के भाष्य चारों वेदों पर हो गये हैं, किन्तु मेरी समझ से किसी भी आध्यात्मिक मंत्र-ऋचाओं का भाष्य नहीं हुआ है, कारण कि कोई भी भाष्यकार अध्यात्मवेत्ता नहीं थे। इसलिये उन मंत्रों पर भाष्य नहीं हो सका,

Scanned with CamScanner

क्योंकि उनका विषय यह नहीं है। यदि उन मंत्रों को आप देखना चाहते हो, तो मेरा 'चतुर्वेदीय ब्रह्मविद्या भाष्य' देखें, पढ़ें और समझें। मंत्रद्रष्टा ऋषि होते हैं, न कि पुस्तकी विद्वान् एवं बिना ऋषि जीवन के वेद समझ में नहीं आता। वेदों को पढ़ने-समझने के लिये प्रथम ऋषि बनिये एवं अपने में महान् व्यक्तित्व लाइये। पीछे वेदों को समझने के लिये इच्छा रखिये। भारत में वेदवेत्ता कोई नहीं है। उनका दर्शन मुझे नहीं मिला है।

एक ही महाविद्यालय में व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य, वेदाचार्य्य -- पाँच विद्वान् एकत्रित मिले। आपस में शास्त्रार्थ हो रहा था, तीन पक्ष में वाद-प्रतिवाद था। मैं गया, बैठ कर सुनने लगा। पाँच मिनट के बाद बोला – पण्डित जी ! विद्वानों की विद्वता वेद में है। अमुक मंत्र का अर्थ आप लोग सब मिलकर कीजिये। उत्तर-- हम लोग साहित्य-व्याकरण के विद्वान् हैं, वेद के नहीं। हम लोग नहीं कर सकते। मैंने कहा कि व्याकरण का प्रयोजन वेद तत्त्वों को निकाल कर संसार के सामने रखना है। वेद-विषयों का प्रचार करना है। भारत में पाणिनी अष्टाध्यायी का एक भी विद्वान् नहीं है कि पाणिनी की शैली से व्याकरण पढ़ाकर व्याकरण का विद्वान् बनाये। चारों वेद का उद्धार करें। भाव यही है कि भारतवर्ष में अष्टाध्यायी पाणिनी की शैली पठन-पाठन में नहीं है। तब तो वह व्याकरण नहीं है, जिस व्याकरण से हम वेद को समझ नहीं सकते हैं। वह व्याकरण नहीं है, न कोई भारत में व्याकरण के विद्वान् हैं।

हम न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा पढ़कर दार्शनिक की उपाधि लेंगे, वा षट् दर्शनों के लक्ष्य, ध्येय का साक्षात्कार, अनुभव प्राप्त कर अर्थात् दर्शन करके दार्शनिक होंगे। मेरी समझ से अध्यात्म विद्या के प्रकाश में योगाभ्यास द्वारा, जब षट्

Scanned with CamScanner

दर्शनों के सारतत्त्व स्वयं मुझे अनुभव समाधि में उपलब्ध हो जायेंगे, तभी मैं अपने को दार्शनिक समझूँगा और मैं सचमुच दार्शनिक हो जाऊँगा। अन्यथा पुस्तक पढ़ने से कोई दार्शनिक न होता है, न है। जो है वह ऐसा ही परोक्षज्ञानवान वाचक ज्ञानी है, सत्य दार्शनिक नहीं। वास्तविक दार्शनिक पुरुष धन्य हैं, उनकी बलिहारी है।

विद्वान् का माने यह होता है कि पुस्तकों को पढ़कर जो जानकारी अपने में हुई है, वह गुण, कर्म, स्वभाव अपने अन्तर में उतारे अर्थात् वह विद्या जीवन में उतरे, अपने अन्दर आवे। यह विद्या है और वह विद्वान् है। पुस्तकी विद्या से कुछ काम न चलेगा, जब तक विद्या अपने अन्दर न उतरेगी। ऋषि, मुनि, योगी विद्वान् होते हैं, क्योंकि उनके अन्दर विद्या प्रकाश करती है। वाणी की विद्या, विद्या नहीं है।

आप वेद पढ़ें, वेद की विद्या पढ़ें तथा वेद का तत्त्व पढ़ें। आप व्याकरण पढ़ें, व्याकरण का उद्देश्य एवं फल पढ़ें। आप षट्दर्शन शास्त्र पढ़ें और उसके तत्त्वों की प्राप्ति के लिये योगाभ्यास द्वारा अन्तर परमतत्त्व का दर्शन कर अपने जीवन को कृत्कृत्य करें। यह मेरा उपदेश है।

८-- सर्व राष्ट्रों की भाषा

सर्व भाषाओं की जननी संस्कृत है। किसी दिन समस्त भूमण्डल में व्याकरण – देववाणी ही थी। वह समय, देश, काल के भेद से रूपान्तर को प्राप्त हुई। देववाणी ने अपने रूप को बदल कर विकृत रूप धारण किया, उसी आधार पर सर्व राष्ट्रों की भिन्न-भिन्न भाषा बन गयी। राष्ट्र देश की बोली जिसमें व्यवहार होता है, वह देश

Scanned with CamScanner

की भाषा है। अनेक राष्ट्र हैं। भिन्न-भिन्न अपनी बोली में अपना व्यवहार करते हैं। जलवायु मिट्टी के भेद के आकृति, स्वभाव तथा भाषा का निर्माण होता है।

कितने भाषा के शौकीन अनेक देशों की भाषा जानने के लिये प्रयास करते हैं और जानते हैं। उनको सर्व देशों में भ्रमण करने के लिये अनेक भाषा जानने से सुविधा होती है और कोई विशेष योग्यता नहीं समझी जायेगी। कई भाषा जानने से कोई विद्वान् नहीं हो सकता। विद्वान् तो वह है जो आर्य्य भाषा तथा व्याकरण भाषा में जो विद्यायें निहित हैं, उन विद्याओं का वेत्ता है, अर्थात् विद्याओं को जानंने से विद्वान् है, कोरे अनेक भाषा जानने से नहीं। इसलिये सब लोग विद्वान् बनें और सत्यभाव को समझें।

६-– राजनीति

नीति माता, धर्म पिता है। इन दोनों से पालन-पोषण होता है। नीति और धर्म इन दोनों से संसार व्यवहार तथा समाज चलता है। नीति और धर्म की अवहेलना करने वाले पतन होकर नष्ट हो जाते हैं। उनका बचाव किसी प्रकार कोई नहीं कर सकता है। इसलिये नीति की रक्षा करते हुए, धर्म का पालन करना चाहिये।

नीति चार प्रकार की होती है। अध्यात्म नीति, धर्म नीति, राजनीति और कूटनीति। कूटनीति भारत की नहीं है। बाहर वाले इसका प्रयोग करते हैं। उक्त तीन भारत की नीति हैं। यह तीन नीति वेदों से तथा सृष्टि आरम्भ काल से क्षत्रिय, चक्रवर्ती सम्राट्,जनपालक महिपालों में रही है। यह नीति राजा-प्रजा दोनों के लिये शुभ, हितकारी है। इन चारों नीतियों का पूर्ण विवरण, अच्छी तरह से

Scanned with CamScanner

व्याख्या, 'सदाफल नीति' में किया गया है। आप वहाँ देखें और नीतिज्ञ होकर अपने जीवन को उच्च, मंगलमय बनावें।

१०-- धर्म और विनाश

राजधर्म, युद्धधर्म, मोक्षधर्म, दानधर्म, आपत्तिधर्म -- यह पाँच प्रकार के धर्म का स्वरूप है। इनके भिन्न-भिन्न अङ्ग और उपाङ्ग हैं। जिससे संसार धारण हो रहा है, वह धर्म है। जिससे संसार, व्यवहार, समाज धारण हो रहा है वा चलता है, वह धर्म है और धर्म से ही राज्य का शासन होता है। जिस राज्य में धर्म नहीं है, वहाँ पर विप्लव होता है। जिससे अभ्युदय और निर्वाण पद प्राप्त होता है, उसे धर्म कहते हैं। नर-जीवन में धर्म एक महान् तत्त्व है, जिसके बिना मृतक जीवन है। विद्यार्थियो ! इसकी तरफ ध्यान देना, धार्मिक जीवन बनाना और अंग्रेजी सभ्यता-रूप दुर्गुणों से बच कर रहना। द्रव्य से गुणों को निकलने से द्रव्य नष्ट हो जाते हैं। जैसे अग्नि से उष्णता, जलाना गुण निकल जाने से अग्नि भस्म होकर नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार जीवन से धर्म निकल जाने से मनुष्य का नाश हो जाता है। अतः विद्यार्थी वृन्द धार्मिक जीवन बनायेंगे। धर्म तथा मर्यादा की अवहेलना न करेंगे, क्योंकि जो धर्म का नाश करता है, उलटिकर धर्म भी उसका नाश कर देता है। इसलिये धर्म से ही अपनी रक्षा है। धर्म ही जीवन है।

११--- सम्प्रदाय

जिसका एक आचार्य है, वा एक पैगम्बर है, एक दिमाग से निकला हुआ बुद्धि मूलक विचार है, उसको सम्प्रदाय कहते हैं। जिस

Scanned with CamScanner

समय संसार में कोई ऋषि नहीं रहे हैं, अन्धकार के समय कलि में जग - सम्प्रदायों की उत्पत्ति हुई है। जग-सम्प्रदाय धर्म नहीं है। एक निम्न विचार का भिन्न वर्ग है। द्वन्द्व-अशान्ति का स्थान है। जग-उन्नति को रोकने वाला है।

ब्रह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य, शूद्र राजपूतों के राज्यकाल में यह वर्णाश्रम राज्य के अङ्ग हैं और वेदों से सृष्टि -प्रारम्भ काल से ही यह सृष्टि में खड़ा है। यह सम्प्रदाय नहीं है बल्कि वैदिक सनातन धर्म है। सब मनुष्य मात्र का मानव धर्म एक ही है। वह भी सम्प्रदाय नहीं है। अध्यात्म विद्या शाश्वत, सनातन अनादि विद्या है। यह किसी मत-सम्प्रदाय में नहीं है। अध्यात्म विद्या समस्त विश्व की है, समस्त विश्व के लिये है, किन्तु इस महान् विद्या को शिरोव्रत धारी अधिकारी जिज्ञासु ही प्राप्त करते हैं। सर्व साधारण इसके अधिकारी नहीं हैं, न उनको वह मिलती है।

हे विवेकी विद्यार्थियो ! तुम किसी सम्प्रदाय में अपना नाम मत लिखाओ। जो लिखा लिये हो, तो उसको शीघ्र कटालो, नहीं तो तुम्हारा जीवन नष्ट होगा। तुम सत्य सनातन, शाश्वत महान् विद्या, अध्यात्म विद्या के प्रकाश में विचरण करो। तुम्हारा कल्याण होगा। जीवन सफल होगा।

''इति द्वितीयः पाठःसमाप्तः''

तृतीयः पाठः प्रारम्भः

१--- राष्ट्र संस्कृति

शुद्धि, पूर्व जन्म की वासना को संस्कार कहते हैं। आत्म अन्तर अन्तःकरण में प्रवाहरूप से उतरा हुआ पूर्व अनेक जन्मों के संस्कारों अर्थात् वासनाओं को संस्कार कहते हैं और शुद्ध किया हुआ,परिमार्जित सत्ता को संस्कृत कहते हैं। उसी संस्कृत को आज संस्कृति कहते हैं। उसी को आर्य्यावर्त की अर्थात् राष्ट्र की संस्कृति कहते हैं।

ईश्वर का संस्कार, अध्यात्म का संस्कार तथा धर्म का संस्कार एवं ऋषियों के समस्त ज्ञान-विज्ञान का संस्कार और पितरों के द्वारा सदाचार का संस्कार राष्ट्र पर वा जनता पर पड़ता है। जाति तथा कुल का एक मौरूसी संस्कार होता है, जो सन्तान में आता है। प्राचीन काल में उच्च कुलों में संस्कार से सन्तान संस्कृत होती थी और माता-पिता की इच्छा के अनुकूल ही सन्तान में संस्कृति बनती थी। इसका संस्कार प्रयोग है.। सन्तान विद्या कला है। एक विद्या है, जिसको ऋषि लोग जानते थे वा जानते हैं। मनुष्यों के गुण, स्वभाव के अनुसार संस्कार बनता है। संस्कार के अनुसार वृत्तियें बनती हैं। वह चित्त की वृत्ति में है। सर्व विषयों का कोश चित्त है। इसलिये वह वासना चित्त वृत्ति हो उठने लगती है। चित्त की वृत्तियें होती हैं, मनोवृत्ति नहीं होती। जो लोग मनोवृत्ति कहते हैं, वह अबोध से कहते हैं और चित्त, मन दो पदार्थ हैं। एक नहीं हैं।

Scanned with CamScanner

संस्कृति और सभ्यता दो वस्तु है, एक नहीं। सभ्यता समाज-व्यवहार का एक बाहरी कृत्य है और भारत की सभ्यता विश्व का आदर्श है। बाहरी सभ्यता भारत में आकर भारत की प्राचीन संस्कृति को नष्ट कर भारत का पतन कर दिया है। बाहरी सभ्यता रूपी भूतिनी को भारत से निकाल देने से ही भारत का उत्थान और कल्याण है, अन्यथा नहीं है।

२--- युग - परिवर्तन

अनन्त सत्ता से संचालित प्राकृत नियमों से भी सृष्टि के समस्त पदार्थों में सामूहिक परिवर्तन हुआ करता है, विशेष पुरुषों के द्वारा बड़ी शक्ति से भी युग-परिवर्तन होता है। सूर्य्य अपनी महान् तेज पुञ्ज शक्ति को हटाकर, निशा को हटाकर दिन के रूप में परिवर्तन करता है। वर्षा ऋतु में मेघ अपनी घटावच्छिन्न शक्ति को नभ में संचित कर महावृष्टि द्वारा ग्रीष्म ऋतु पर विजय प्राप्त करता है। ब्रह्मवेत्ता अध्यात्म विद्या के प्रकाश के द्वारा विश्व के अविद्या-अन्धकार को दूर हटाकर विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना रूप युग-परिवर्तन करते हैं। ब्रह्मवेत्ता विशेष योगी ब्रह्मप्रदत्त ज्ञान एवं महान् शक्ति की प्रतिभा द्वारा घोर कलियुग को हटाकर सत्युग रूप में परिवर्तन कर देते हैं। विश्व में जहाँ पर अध्यात्म विद्या प्रकाश करती है, वहाँ पर कलियुग नहीं रहता है। विशेष पुरुषों द्वारा मस्तिष्क का परिवर्तन, स्वभाव का परिवर्तन, कर्म का परिवर्तन और जीवन का परिवर्तन हो जाता है। विशेषज्ञ महापुरुष जब ईश्वरी शक्ति कला लेकर संसार में प्रगट हो जाते हैं, तब युग-परिवर्तन होता है, ऐसे नहीं।

३--- समाज

Scanned with CamScanner

राजनीति, धर्म-अध्यात्म एवं वेदों की समस्त विद्यायें, ज्ञान-विज्ञान उतर कर समाज में ही आते हैं। समाज के ही, समाज के लिये ही हैं। जनता उनसे लाभ उठाती है। उनको जानती है। सब लोग जनता की बात सुनें तथा सुनना चाहिये। एक धोबी के कहने से श्री रामचन्द्र अपनी प्रिय स्त्री सीता को वनवास दे दिये। समाज का इतना अधिकार है। जो लोग उठे हैं समाज में, फले-फूले हैं समाज में लय हुए हैं, समाज में हैं। इसलिये समाज क्षेत्र सबका जीवन-लीला या क्षेत्र है। इसका अनादर नहीं किया जा सकता। सब लोग समाज को देखते हुए चलें। समाज के साथ होकर चलें। व्यवहार समाज से विरुद्ध स्वतन्त्र काम आप किसी प्रकार भी नहीं कर सकते हैं, न करना होगा।

४--- बाल-बालिका जीवन

बाल-बालिका शिक्षा के लिये पाठशाला चलें। उनके लिये प्रथम अमृत शिक्षा यह है कि वे बाहरी पश्चिमी सभ्यता रूप भूतिनी को सर्वथा के लिये अपने जीवन से निकाल दें। तब वे आगे बढ़ेंगे तथा विद्या, धन एवं जीवन को प्राप्त करेंगे, अन्यथा विद्वान् न होंगे, बल्कि पश्चिमी सभ्यता से पतन हो नष्ट हो जायेंगे। जैसे पश्चिमी भोजन-छाजन, रहन-सहन, भेष-भूषण, हाव-भाव आदि तुम्हारे लिये विष है और बहुत बुरा है। इसको जल्द छोड़ो और राष्ट्र की सभ्यता भाव में आवो, जिस सभ्यता में तुम्हारे पूर्वज रहते थे और सारे विश्व का गुरु बनकर गुरुपद से पूजित होते थे। आज उन्हीं की सन्तान तुम विदेशियों के भाव में आ जाते हो। यह बड़ा दोष है और बुरा है।

भारत में ब्रह्मचर्य प्रधान है। **प्राचीन** भारत में बाल-बालिकाओं की पाठशाला पृथक्-पृथक् होती थी। पठन-पाठन में

Scanned with CamScanner

एक से दूसरे का कुछ सम्पर्क नहीं रहता था। गुरुदेव उनको नियम पूर्वक शिक्षा तथा दीक्षा देते थे। आज पश्चिमी सभ्यता की नकल कर एक ही कॉलेज में बाल तथा बालिका शिक्षा पा रहे हैं और पश्चिमी भयंकर दोषों के पुञ्ज में तल्लीन होकर विकृत रंग में रंग रहे हैं। ये पढ़ते क्या हैं ? बल्कि वे पैत्रिक मरूसी सम्पत्ति को भी नष्ट कर रहे हैं। अतः बाल-बालिका पृथक्-पृथक् शिक्षा पावें। मैंने कभी-कभी कॉलेज में आते वा जाते हुए बाल-बालिकाओं को देखा है। वह मुझे अच्छा प्रतीत नहीं होता। अतः यह अच्छा नहीं है। वे अच्छे ढंग से रहें और विद्या पढ़ें। पर राष्ट्र निम्न सभ्यता के अनुसार बाल तथा बालिका विवाह करने में स्वतन्त्र नहीं हैं, नहीं रहेंगे। भारत की बाल-बालिकाओं का विवाह उनके माता-पिता करेंगे वा उनके भाई करेंगे। अथवा उनके परिवार के लोग करेंगे। जहाँ चाहें, जैसे चाहें वा जिससे चाहें आप विवाह कर लें, ऐसा न होगा, न होने पायगा। राष्ट्र, कुल, मर्यादा के अनुकूल ही आप लोगों को चलना होगा। इसी में आपका कल्याण है और इसी में आपका उत्कर्ष है।

५-- जाति-मीमांसा

जो आकृति से ग्रहण हो अर्थात् जाना जाय उसको जाति कहते हैं। जाति के चिन्हों को आकृति कहते हैं। अर्थात् जिन चिन्हों से जाति जानी जाती है, उसको आकृति कहते हैं। जिनका समान प्रसव हो, उनको जाति कहते हैं। जैसे मनुष्य, गाय, घोड़ा, भैंस आदि तथा आम, अनार, अमरूद आदि वृक्ष। कोकिला, सुवा, मैना, तीतर, हारिल आदि पक्षी। यह सब जाति है। जहाँ पर जाति बदलती है, वहाँ पर रूप रेखा बदल जाती है। एक रूप रेखा में दो जाति नहीं होती। इस मीमांसा से मनुष्य जाति एक है, अनेक नहीं। अनेक है

Scanned with CamScanner

तो कर्म, गुण, स्वभाव है। एक जन्म से जाति उत्पन्न होती है और दूसरा कर्म-गुण-स्वभाव से जाति बनती है। इसलिये कर्म की जाति एक से अनेक हो गयी। उनके कर्म-गुण-स्वभाव भी अनेक हो गये हैं, किन्तु वे सब मनुष्य हैं, मनुष्य की जाति में हैं।

सब मनुष्य समान नहीं होते हैं। सबके कर्म-गुण-स्वभाव समान नहीं है। सब में सत्व, रज, तम गुण समान नहीं है। सब में कर्म शक्ति और जीवन शक्ति समान नहीं है। इसलिये सब मनुष्य होते हुए भी समान नहीं हैं; न समान हो सकते हैं, क्योंकि सबके दुख-सुख, भोग-भाग-कर्म समान नहीं हैं। अतएव कर्म की विचित्रता से सृष्टि विचित्र हैं। एक समान नहीं है। जो सब मनुष्यों को समान कहते हैं, वे रोटी बिना व्याकुल होकर कहते हैं। वह विवेक के प्रकाश में, धर्म शान्ति में नहीं कहते। सृष्टि के कोई भी पदार्थ समान नहीं हैं। सब भिन्न हैं। मनुष्यों की बनावट भी भिन्न- भिन्न है, एक नहीं। एक मनुष्य की रूप-रेखा दूसरे में नहीं मिल सकती, क्योंकि सृष्टि विचित्र है।

६-- भोजन तथा शौच

आहार की शुद्धि से अन्तःकरण की शुद्धि होती है। इसलिये विद्यार्थी वृन्द सात्विक पदार्थ भोजन करें, जिससे बुद्धि पवित्र हो और समस्त विद्यायें शीघ्र प्राप्त हों। विद्यार्थी मांस, मद्य, अण्डा तथा सूअर के चोखा भक्षण न करें, क्योंकि यह सब मनुष्यों का भोज्य नहीं है, बल्कि असुरों का भोजन है। विद्यार्थियों के लिये मादक द्रव्य सभी निषेध है। विद्यार्थी किसी प्रकार की नशा सेवन नहीं कर सकता। फल-फूल, गौ का दूध, घीव अधिक सेवन करें और कुसंग से बचें। शौच भी उत्थान के साधनों में एक बड़ा साधन है। देह-वस्त्र,

मकान, आसन पवित्र रखें, गन्दा न करें। साफ-सुथरा रहें। अन्न,जल तथा वायु शुद्ध लें। अन्न -जल में शौच का ख्याल रखें। शौच शारीरिक तथा मानसिक शक्ति को बढ़ाने वाला है। अतः शौच पर ध्यान दें।

७--- मित्र से लाभ

ईश्वर तथा गुरु का जग-जीवों पर अकारण सहज प्रेम होता है। माता-पिता के अपने पुत्र पर सहज प्रेम होता है। उसी प्रकार मित्र का मित्र पर सहज प्रेम होता है। निष्काम शुद्ध प्रेम सच्चा मित्र का होता है। स्वार्थ सामयिक छल-कपट का प्रेम मित्र का नहीं होता। मेढ़क सर्प से, चूहा बिल्ली से, गाय व्याघ्र से, सज्जन खल से मित्रता करके मृत्यु को प्राप्त होते हैं। जातीय-विजातीय, कर्म-गुण-स्वभाव मिलाकर वा मिलता हो और निष्काम सहज प्रेम हो, यह अच्छा है, मित्र बनावें। इससे क्षति न होगी, बल्कि लाभ होगा। स्वार्थ-समय-देश-काल की मित्रता धोखा है, दुखदायी है। मित्र से मित्र को सुख -लाभ होना चाहिये। मित्र वही है जो आपत्ति के समय में साथ दे वा अपने पर कष्ट सहकर मित्र को लाभ पहुँचावे तथा बचावे। भाग्यवान ही नर को मित्र मिलते हैं।

८--- उत्थान का प्रथम साधन ब्रह्मचर्य है

पिण्ड में मन-बुद्धि, इन्द्रियें तथा देह हैं। अर्थात् देह में अस्थि, नस, प्राण, नाड़ियें हैं। सबको पुष्ट तथा दृढ़ करने वाला वीर्य्य है। यह ढाँचा खड़ी है। यह वीर्य्य के द्वारा ही तैयार होगा वा अपने शुद्ध रूप में बनेगा। वीर्य्य के अभाव में यह सब कमजोर हो जाते

Scanned with CamScanner

हैं। पूर्ण बलशाली नहीं होते। वीर्य्य बल है, बल से जीवन है। ब्रह्मचारी दीर्घायु होते हैं एवं सर्वगुण सम्पन्न होते हैं। पूर्ण ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्या प्राप्त होती है। ब्रह्मचर्य्य भ्रष्ट क्या पढ़ेगा ? इसलिये आप लोग ब्रह्मचर्य्य का पालन करें एवं ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा वीर्य्य लाभ है। जो अपना सर्व प्रकार से उत्थान चाहते हैं, वे पूर्ण आठो अङ्ग से ब्रह्मचर्य्य का पालन करें। उन्नति का ब्रह्मचर्य प्रथम साधन है।

६— सत्य, दया, शील

सत्य स्वरूप ब्रह्म है। सत्य का स्वरूप ही हो जाना सत्य की प्राप्ति है। सत्य केवल वाणी से नहीं होता। विद्यार्थियों को सत्य की खोज करना चाहिये। मीमांसा करके सत्य का निर्णय करें। जो- जो ही कह दे,उसको न मान लें। आप्त पुरुषों के वचन का प्रमाण मानें, उस पर तर्क न करें। नास्तिकता को दूर करने के लिये तर्क है, नास्तिक बनने के लिए तर्क नहीं है। अध्यात्म में तर्क की अप्रतिष्ठा है। सत्य तर्क से प्राप्त नहीं होता, बल्कि साधन-अनुभव से सत्य तत्त्व प्राप्त होते हैं। अभ्यास में सत्य की भूमि है, उस मण्डल में पहुँचा हुआ योगी निर्भ्रान्त सत्य वक्ता होता है। अभ्यास शून्य तर्क मूढ़ों के लिये है, सत्य निर्णय के लिये नहीं। अतः विद्यार्थी जीवन विद्या के प्रकाश में सत्य के अन्वेषण के लिये है। उत्तम विद्यार्थी आप्त उपदेश को मानते हैं।

सत्य दया-भक्ति का अंग है। सर्व प्राणियों पर दया करना चाहिये, क्योंकि कीरी- कुंजर दोनों भगवान् के जीव हैं एवं समदर्शी भाव में सर्व जीवों पर दया करें। केवल गुरुद्रोही और आततायी पर दया न करें। वह वध का पात्र है। गुरुद्रोही पर दया गुरु ही करें, दूसरा नहीं कर सकता। उस पर प्रभु भी दया नहीं कर सकते हैं।

गुरुद्रोही दया का पात्र नहीं है। सर्व प्राणियों पर दया करने वाले मनुष्य भगवान् के भाव में आ जाते हैं। उनको भगवान् प्रिय कहते हैं, उनको देखते हैं। इसलिये जीव दया परम धर्म है।

शील अर्थात् योगाभ्यास द्वारा ब्रह्म का ध्यान करना चाहिये, क्योंकि नर-जीवन का लक्ष्य भगवद्प्राप्ति है। और सबके वचन का स्वागत न करना अर्थात् सबसे शील न करना उदण्ड, लंठपन, उद्धत स्वभाव के मनुष्य निम्न कोटि के मनुष्य समझे जाते हैं। अतः बड़े लोग नम्र स्वभाव के होते हैं। सज्जन पुरुष विवेक-धैर्य-क्षमा-शान्ति प्रिय होते हैं। इसलिये विद्यार्थियो ! तुम सज्जन विद्वान् बनो। तुम्हारे ही ऊपर विश्व का उत्थान निर्भर है। अपने पुरुषार्थ से राष्ट्र को तथा विश्व को उठावो और आगे ले चलो।

१०--- स्वर्वेद, बीजक तथा वेदों का महत्त्व।

विश्व में अध्यात्म क्षेत्र का अद्वितीय ग्रन्थ स्वर्वेद है। और स्वर्वेद आर्य्य भाषा में है। अध्यात्म विद्या का समस्त विषय किसी एक ग्रन्थ में नहीं आया है, न ग्रन्थों में मिलता है। स्वर्वेद में अध्यात्म विद्या के ब्रह्म तत्त्व-ज्ञान एवं आभ्यन्तर भेद साधन सर्व पूर्णरूपेण आया हुआ है। इसलिये स्वर्वेद अध्यात्म विद्या का विश्व में अद्वितीय, पूर्ण ग्रन्थ है और स्वर्वेद आर्य्य भाषा में है। इसलिये आर्य्य भाषा की प्रतिष्ठा है। सब लोग आर्य्य भाषा पढ़ेंगे।

बीजक देव नागरी में है, जिसमें सब भाषा मिली हुई है। बीजक अध्यात्म विद्या का ग्रन्थ है एवं अध्यात्म का मार्तण्ड है। अध्यात्म विद्या के जिज्ञासु मेरा बीजक भाष्य अवश्य पढ़ें। श्री सद्गुरु कबीर साहेब का ग्रन्थ बीजक है। उस बीजक पर श्री सदाफल देव

Scanned with CamScanner

जी का भाष्य है। स्वर्वेद के प्रणेता श्री सदाफल देव जी हैं। सदाफल देव जी के मस्तिष्क तथा हृदय में यह स्वर्वेद अवतरित हुआ है, जो संसार के सामने है। सृष्टि आरम्भ काल के संसार का पहला ग्रन्थ चारों वेद हैं, जो सारे विश्व के लिये हैं, जो कुछ सत्य विद्यायें हैं उन सबका बीज चार वेदों में विद्यमान है। वेद सब विद्याओं का एवं समस्त ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है और सर्व विद्याओं का प्रकाशक है। वेद के समान संसार में सर्व कलासम्पन्न कोई ग्रन्थ नहीं है, न हो सकता है। जो पूर्ण विद्वान् बनना चाहते हैं, वह चार वेदों को पढ़ें, अर्थ, परमार्थ के साथ पढ़ें। केवल स्वर सहित पाठ करना वेद विद्या नहीं है। वेदों का रहस्य समझना, उसको अपने मस्तिष्क तथा हृदय में लाना तथा उतारना 'वेदों' का ज्ञान है और वेदों का पढ़ना है। अध्यात्म विद्या आर्य्य भाषा में उतरी है। अध्यात्म विद्या का पूर्ण प्रकाश आर्य्य भाषा में है। आप लोग आर्य्य भाषा बिना पढ़े पूर्ण विद्वान् नहीं होंगे, क्योंकि अध्यात्म विद्या आर्य्य भाषा में है, अन्य भाषा में नहीं है। इसलिये आप लोग एवं समस्त संसार के जिज्ञासु आर्य्य भाषा जो विश्व प्रधान है, उसको पढ़ें और विद्वान् बनें।

११--- ऋषि जीवन, दर्शन

संसार से वीतराग, ब्रह्म में तल्लीन ज्ञान-तपोमय जीवन ऋषि जीवन है। ज्ञान-विज्ञान -सम्पन्न तथा लोकहित कारिणी विद्यायें जिसमें उत्पन्न होती हैं, वह मंत्रद्रष्टा ऋषि है। ऋषि वृन्द गिरि, अरण्य, गंगा, यमुना तथा नर्मदा आदि नदियों के तट पर निवास करते थे वा करते हैं और जगहितकारी समस्त विषयों का आविष्कार कर अपने मस्तिष्क में रखते थे। राजनीति तथा राज्य विधान बनाकर विश्व राजाओं को देते थे कि तुम ऐसे राज्य शासन करो। कहीं -कहीं पर

दुष्ट राजाओं को राज सिंहासन से उतार कर उनके पुत्रों को राजसिंहासन पर बैठाये हैं, बैठाते थे। नृप, भू, महिपाल उन ऋषियों के हाथ के खिलौना थे। राजा लोग ऋषियों के आदेश के अनुसार धर्म से राज्य का शासन करते थे। यह ऋषि पद और ऋषि जीवन है। आज भी भारद्वाज ऋषि रचित व्योमयानशास्त्र हस्तलिखित प्राप्त हुआ है, जिसको देख कर संसार की आँख खुल रही है कि ऋषि वर्ग कैसे थे। आर्य्यावर्त देश ऋषियों का देश है। आर्य्यावर्त में ही ऋषि लोग प्रगट होते थे वा प्रगट होते हैं। आर्य्यावर्त देश से अन्य बाहर देशों में कोई ऋषि नहीं हुए हैं, न हैं, न दर्शन लिखे हैं। आर्य्यावर्त के ऋषियों को देखकर कुछ लोग नकल करने की चेष्टा किये हैं, किन्तु यह कहाँ होता है ? जब ऋषि हो, तब दर्शन हो। पश्चिमी दर्शन ऐसे नाम का दर्शन है, वास्तव में कुछ नहीं है। कहीं सर्व साधारण जीवन तथा साधारण व्यक्तित्व में दर्शन होता है ? नहीं नहीं, यह उन लोगों का भ्रम है और अनधिकार चेष्टा हैं। भारतीय ऋषियों के दर्शन हैं -- न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त, मीसांसा ये षट् दर्शन हैं, जिनको गोतम, कणाद, कपिल, पतञ्जलि, व्यास, जैमिनी ने लिखा है। वे लोग ऋषि थे। दर्शन लिखने के अधिकारी थे। जगपूज्य जगद्गुरु थे। दर्शन सबका विषय नहीं है। मैंने भी एक विज्ञान दर्शन लिखा है। इसको संसार देखे तथा विचारे। उसी के अनुकूल आप संयम करें और अपना सिद्धान्त बनावें।

।।इति तृतीयः पाठः समाप्तः।।

अथचतुर्थः पाठः प्रारम्भः

१--- भारतीय सभ्यता में भारत सदैव संसार का गुरु रहा है और रहेगा ---

सभ्य सभ्यता सर्व व्यापक शब्द है। सत्य बोली, वाणी, रहन-सहन, ऊठन-बैठन, भोजन-छाजन, भेष-भूषण, त्याग-संग्रह सम्बन्ध, परस्पर प्रेम, आय-व्यय, सेवक-स्वामी, राजा-प्रजा, पति-पत्नी, पिता-पुत्र, शिष्य-गुरु, युद्ध-सन्धि, शत्रु-मित्र, योग-यज्ञ, भुक्ति-मुक्ति आदि इन सभी व्यवहारों में सभ्यता है। सभ्यता से विरुद्ध कृत्य सभी बुरे और अनुचित हैं। जो व्यवहार आत्मप्रिय, दोनों को हितकारी, निष्कपट, सच्चा है, वही उत्तम सभ्यता है। भारत की सभ्यता सर्वोच्च विश्व का आदर्श है। जो भारतीय जन दूसरे देशों से सभ्यता सीखते हैं वा उनका नकल करते हैं, वे महामूर्ख हैं और निम्न कोटि के मनुष्यों में हैं। चारों वेद विश्व का ग्रन्थ है, विश्व के लिये है। वेदों में समस्त विद्यायें पड़ी हुई हैं। उन विद्याओं को पढ़ने, जानने के लिये विश्व आता था वा आयेगा। जगत्गुरु अध्यात्म विद्या का विश्व प्रचारक आर्य्यावर्त में ही प्रगट होते हैं, अन्य किसी देश में नहीं। उस अध्यात्म विद्या के लिये तथा अन्यान्य विद्याओं की शिक्षा-दीक्षा के लिये पृथ्वी मात्र के अर्थात् भूमण्डल के मानव सब भारतवर्ष-आर्य्यावर्त में आते थे एवं आवेंगे। सब लोग शिक्षा पाते थे और पावेंगे।

इसलिये भारत इस महाव्यक्तित्व से विश्व का अर्थात् सारे संसार का गुरु रहा है, अभी है और आगे रहेगा। भारत सदैव जगत् का गुरु है, अभी वा कभी शिष्य नहीं है। अध्यात्म कर्म, राजनीति, सभ्यता, व्यवहार आदि सब में भारत सबका गुरु है। जो बाहर से नीति, विचार लाकर भारत में प्रचार करते हैं वा करना चाहते हैं, वह भारत-विज्ञान से अनभिज्ञ हैं, ना समझ हैं। वे ओछे स्वभाव के हैं। भारत की विद्या तथा भारत की महिमा को नहीं जानते हैं। वे भारत का अपमान करते वा कराते हैं।

२--- उच्च गौरव किसी का अनुगामी नहीं।

झूठी मान-बड़ाई पतन का कारण है। इसलिये विवेकी जन झूठी मान-बड़ाई को नहीं चाहते। उत्तम कर्म-गुण-स्वाभाव से, उच्च जीवन से, सहज उच्च गौरव प्राप्त होता है। लोकप्रिय सेवा तथा परोपकार से होता है। महातप, पूर्ण विद्या, योग ऐश्वर्य, तपोधन, महाव्यक्तित्व से उच्च गौरव आपे आप होता है। उच्च गौरव चाहने से नहीं होता। इसलिये आप उत्तम कर्म-गुण-स्वभाव सम्पन्न होकर उच्च गौरव को प्राप्त करें -- जिसमें जीवन महान् है और मानव जीवन सफल है।

दूसरे के पीछे चलना बड़ा बुरा है तथा श्वान स्वभाव है। किसी के पीछे न चलें, आगे चलें। आप अपने को ऐसे बनावें। जब अपने में महान् जीवन तथा महाव्यक्तित्व प्रकाशमान होगा, तब आपके पीछे सब लोग चलेंगे, आप जब अग्रगामी होंगे, क्योंकि पीछे चलने वाले साधारण व्यक्ति होते हैं। आचार्य सद्गुरु के पीछे चलना शोभा

देता है। उनके पीछे चलने की अभिलाषा रखना चाहिये, क्योंकि भाग्यवान ही नर-नारी सद्गुरु अनुगामी होते हैं, अभागे नहीं।

३-- विवेक - सम्पन्न विवाह से लाभ।

कन्या-वर समान उत्तम कुल स्वजातीय है। विद्या-योग्यता तथा कर्म-गुण-स्वभाव समान है। दोनों के दोनों प्रिय अनुकूल हैं, कोई विरूद्ध नहीं है। धन सम्पत्ति में दोनों प्रसन्न हैं। वेद, लोक, मर्यादा के अनुसार हैं। यह विवेक -सम्पन्न विवाह है। इससे दोनों को लाभ और सुख-शान्ति की प्राप्ति है। अन्तर्जातीय विवाह अनुचित और बहुत बुरा है। वह नहीं चाहिये।

४-- पूर्ण विद्वान् कैसे होंगे ?

ब्रह्मचर्य, आत्म संयम, सात्विक भोजन, योगाभ्यास, तपस्वी जीवन, नियमित पाठ, ब्राह्ममुहर्त में ब्रह्म प्रकाश लेने से धीर, विचारशील पुरुष पूर्ण विद्वान् होते हैं। विद्यार्थी वृन्द यह प्रयास करें और अपने जीवन को तथा अपनी विद्वता को संसार के सामने रखें, यह अमृत उपदेश है।

५-- विद्या अन्तर उतरती है, केवल पुस्तक पढ़ना विद्या नहीं है।

आप पाठशाला जाते हैं, विद्या पढ़ते हैं, फिर भी विद्वान् नहीं होते। इसका क्या कारण है ? सत्य विद्यायें ईश्वर की विद्यायें

हैं। आप असत्य भाषण करते हैं, संयमी नहीं हैं, लंगोटा खींचकर नहीं बान्धते, ईश्वर का भय नहीं मानते, अपना उच्च स्वभाव नहीं बनाते। सर्व विद्याओं का केन्द्र भगवान् है, ऐसा नहीं समझते, शम-दम, तितिक्षा आदि उत्तम गुणों को आप अपने में नहीं लाते, विद्यार्थी का जो जीवन है, वह आप नहीं रखते, विद्या पढ़ना निज कर्तव्य है, ऐसा आप नहीं समझते, श्वान वृत्ति (नौकरी) के लिये विद्या है, ऐसा समझते हैं, हम पढ़कर बड़े पद पर नौकरी करेंगे, आपका ऐसा निम्न संकल्प है। विद्या पढ़कर ज्ञान प्राप्त, ईश्वर की प्राप्ति करेंगे, ऐसा नहीं समझते। मैं विद्या पढ़कर राष्ट्र की तथा विश्व की सेवा करूँगा, ऐसा आपका संकल्प नहीं है, बल्कि आपका संकल्प है कि मैं विद्या पढ़कर नौकरी करूँगा, धन प्राप्त करूँगा, संसारी जीवन व्यतीत करूँगा। अब इसी पर विचार करना है। जिसका संकल्प ही नीच तथा पतन का है, वह विद्वान् कैसे होगा ? क्यों कर होगा ? आप लोग गुलामी, पराधीनता, श्वानवृत्ति का भाव अपने हृदय से निकाल दें, तब अच्छा होगा। जैसा बीज बोवेंगे, वही अंकुर वा वृक्ष होगा, वही फल-फूल होगा। आप तो नीच, पतन का संकल्प कर विद्या पढ़ने लगे, इसलिये आप विद्वान् नहीं हो रहे हैं, क्योंकि विद्वान् होने का संकल्प नहीं था। आप लोगों को अमृत उपदेश यही है कि आप लोग अपने उच्च जीवन के लिये स्वाध्याय करें तथा उक्त गुणों को धारण करें और विद्वान् बनें। धर्म-ईश्वर सम्बन्ध में आप लोग वेद, उपनिषद् तथा दर्शन पढ़ते हैं, किन्तु आप कुछ करते नहीं हैं। आपकी विद्या कोरी पुस्तकी विद्या है। विद्या का प्रभाव जीवन पर नहीं है। वह पढ़ी हुई विद्या अन्तर नहीं उतरी है। वह केवल वाणी-पुस्तक में है। वास्तव में विद्या तथा

विद्वान् तो वही है, जो वेद-दर्शनों के अनुसार उसका जीवनऔर व्यक्तित्व हो जाय, उसके रोम-रोम में विद्या का प्रकाश होने लगे। विद्या उसके अन्तर अवतरित होकर अविद्या को बाहर निकाल खदेड़े। वही विद्या है और वही विद्वान् है। अन्य विद्या नहीं, बल्कि बिडम्बना है।

६--- हृदय और मस्तिष्क को एक में सीकर साथ लेकर चलें।

इस मानव देह में दो प्रधान स्थान हैं, जिनसे संसार के समस्त कार्य होते हैं। एक है हृदय और दूसरा मस्तिष्क। हृदय आत्मा का स्थान है अर्थात् हृदय में आत्मा का निवास है। उसका अंगुष्ठ मात्र मण्डल है। मस्तिष्क के द्वारा विश्व के सभी विज्ञान आत्मा में आते हैं। मस्तिष्क भी चेतन आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान है। उसमें भी चेतन आत्मा की शक्ति है। मस्तिष्क का मण्डल कपाल के अन्दर सहस्त्रार चक्र में है, जहाँ पर सुष्मन द्वार, ब्रह्म रंध्र है। वही मस्तिष्क का मण्डल है। वेद तथा अध्यात्म विज्ञानियों का उपदेश है कि हृदय और मस्तिष्क को एक में सीकर साथ लेकर चलो। भाव यह है कि हृदय में आत्मा है। आत्मा में चिति कला है। आत्मा में ईश्वर भक्ति तथा धर्म एवं मर्यादा सबका स्थान है। आत्मा में अनन्त सत्ता से प्रकाश मिलता है। इसलिये आत्मा से स्वतन्त्र मस्तिष्क जड़त्त्व भाव में अधः पतन मार्ग में जायगा और आत्मा का विनाश कर देगा। अर्थात् मस्तिष्क का प्रवाह आत्मरहित विनाश का कारण है। इसलिये हृदय

Scanned with CamScanner

और मस्तिष्क को एक में सीकर साथ लेकर चलो, कहा गया है। यह अथर्ववेद का उपदेश है।

सम्प्रति युग में यह अनेक देखे जा रहे हैं। स्कूल, कॉलेजों में विद्यार्थी बी.ए., एम.ए. के पाठ आधुनिक साईंस पढ़ते हैं। उनके मस्तिष्क के साथ हृदय नहीं है अर्थात् वे ईश्वर का चिन्तन, धर्म अनुष्ठान, सन्ध्योपासन, प्राणायाम, वेद, सद्ग्रन्थों का पाठ नहीं करते। उनमें शुभ भावना, आस्तिक्य भाव नहीं है। वे केवल मस्तिष्क को लेकर चलते हैं। हृदय शून्य मस्तिष्क अन्धकार को जाता है। चेतन रहित, विपरीत उसकी धारा बहती है। वह कुतर्क के पंजे में पकड़ जाता है। मस्तिष्क अन्धकार में उसको ले जाकर उसको नास्तिक बना देता है। उसमें मनुष्य होते हुए भी आसुरी या शैतान बुद्धि प्रगट हो जाती है। उसका धर्म-ईश्वर, मर्यादा पर अविश्वास होने लगता है। वह अनीश्वरवादी हो जाता है और वह मनुष्य के रूप में प्रेत भाव को प्राप्त होकर नष्ट हो जाता है। यदि हृदय उसके मस्तिष्क के साथ-साथ रहता, तो ऐसा अनर्थ प्रगट नहीं होता, न उसका जीवन नष्ट होता। इसलिये अथर्ववेद का उपदेश है कि हृदय और मस्तिष्क को एक में सीकर साथ लेकर चलो, यानी जितना हृदय बढ़े उतना मस्तिष्क बढ़ावो। हृदय को त्याग कर केवल मस्तिष्क लेकर न चलो, नहीं तो मनुष्यत्व धर्म से रहित होकर नष्ट हो जाओगे। अतः हृदय-मस्तिष्क साथ लेकर चलो। इसी में आपका कल्याण है। इसी में आपका उत्कर्ष है। इसी में आपका जीवन है।

७--- धर्मज्ञ बनें, तत्त्वज्ञ बनें, लोकप्रिय बनें।

धर्मी ईश्वर के गुण ही तो धर्म है। उन ईश्वरीय गुणों को अपने में धारण करने से मनुष्य, मनुष्य बनता है, सज्जन बनता, संत

बनता है। धर्महीन पशुवत् जीवन है। अतः आप लोग धर्मज्ञ बनें और मानव जन्म को सफल करें। भगवान् सभी ज्ञानों के योनि हैं अर्थात् कारण हैं। भगवान् के अनन्त ज्ञान भण्डार से ही विश्व में समस्त ज्ञान उदय होते हैं। इसलिये ब्रह्म-साक्षात्कार में ही मनुष्य सर्व तत्त्वज्ञ हो सकता है वा होता है। अतः आप लोग अध्यात्म विद्या की उपलब्धि में योगाभ्यास द्वारा सर्व तत्त्वों के वेत्ता बनकर सर्व तत्त्वज्ञ बनें। आप लोगों का यही पुरुषार्थ है। यही महान् जीवन है। सर्व मनुष्य तथा सर्व प्राणियों की सेवा करने से परोपकारी ही पुरुष लोकप्रिय होते हैं। अतः आप लोग विद्यार्थी जीवन से ही परोपकार सीखें और अपने जीवन को उच्च बनावें। इसी में आपका उत्थान है वा कल्याण है।

८-- ऋषि, मुनि और योगी बनें।

मंत्रद्रष्टा ऋषि है, मननशील मुनि है और आत्मा का परमात्मा में मिलन योग है एवं वही वीतरागी समाधिस्थ महापुरुष योगी है। समस्त विद्याओं का वेत्ता विद्वान् है। समस्त तत्त्वों का मनन कर निश्चय करने वाला मुनि है और अध्यात्म विद्या के प्रकाश में सहज योगाभ्यास कर परब्रह्म की प्राप्ति कर जीवन्मुक्त पुरुष योगी है। विश्व में सर्व उच्च पद ऋषि, मुनि, योगी है। इसलिये आप लोग ऋषि, मुनि, योगी बनें। यह अमृत उपदेश है।

।। इति चतुर्थः पाठः समाप्तः।।

अथपञ्चमः पाठः प्रारम्भः

१ -- विद्या अवतरित रूप सज्जन विद्वान् हैं।

मनुष्यत्व गुणसम्पन्न सज्जन हैं। विद्यायें अन्तर उतर कर मन-बुद्धि तथा आत्मा एवं देह संघात इन्द्रियों पर जब प्रकाशमान होती हैं, तब उसके कर्म, गुण, स्वभाव में विद्या का रूप झलकने लगता है। विद्या की आभा उसके मुख मण्डल पर और उसके जीवन में आ जाती है, तब वह विद्वान् होता है, अन्यथा नहीं। पुस्तकी विद्या केवल वाणी में आ जाने से वह विद्या नहीं है, जब तक कि वह विद्या अपने जीवन में न उतरे।

जिस अवस्था में मूर्ख तथा विद्वान् की कर्म भूमि एक ही समान है, कुछ अन्तर नहीं है, उस अवस्था में वे दोनों समान मूर्ख हैं, विद्वान् नहीं। अतः विद्या बड़ा रत्न है और विद्वान् देव हैं।

२--- उपकार उत्तम गुण है। किसी की निन्दा न करें।

सज्जन पुरुष मन, वच, काया से पर उपकार करते हैं। हर प्रकार से सर्व प्राणियों की भलाई करना उपकार है, जिसमें अपना स्वार्थ कुछ भी न हो, दूसरों के सुख के लिये हो, यह उपकार है। प्रान्त उपकार, राष्ट्र उपकार, विश्व उपकार परोपकार करने वाले व्यक्ति सदैव सुख-शान्ति से रहते हैं। वे लोकप्रिय हो जाते हैं। उनको सब मानता है, उनकी सेवा करता है।

Scanned with CamScanner

बड़े लोग किसी की निन्दा नहीं करते हैं। निन्दा कर्म बहुत बुरा है। यह नीच मनुष्यों में होता है, श्रेष्ठ मनुष्यों में नहीं। निन्दकी चाण्डाल संज्ञा को प्राप्त करता है। इसलिये किसी की भी निन्दा अपने मुख से आप न निकालें। निन्दा करना महा दुर्गुण है। निन्दा करने वाले सदा गिरते हुए देखे जाते हैंअर्थात् वे स्वयं पतन हो जाते हैं। सर्व जीव भगवान् के हैं। आप लोग सबसे प्रेम करें, अपने समान जानें।

३--- वीतरागी पुरुष धन्य है।

जिन पदार्थों को अनेकों बार भोग चुके हैं, उनकी वासना अन्तर बसी हुई है। उन-उन पदार्थों को देख कर तथा उनको सुन कर उनकी प्राप्ति की जो इच्छा मन में उदय होती है, उसको राग कहते हैं। सारे संसार के मनुष्य राग की इच्छा करते हैं। उसकी प्राप्ति के लिये अनेक प्रयत्न, साधन करते हैं। मनुष्य जो कुछ करता है, माया के लिये तथा माया-सुख के लिये करता है। सर्व जीव भोग में लिप्त हैं। संसार-भोगों से वैराग्य नहीं होता है। इस संसार में रहते हुए, इस संसार-सुख से उपरम हो गया है, वह वीतरागी पुरुष धन्य है और वह महात्मा है।

४--- अध्यात्म विद्या के द्वारा ही कोई कर्म क्षेत्र में कुशल तथा दक्ष हो सकता है।

कर्म क्षेत्र संसार में मनुष्यों को कर्म करने के लिये प्रथम भक्ति सम्पादन करना चाहिये, जिसके द्वारा संसार के समस्त कर्म कर सके, सर्व कर्म कला में कुशल और सर्व कर्मों में दक्ष बनें। प्राकृत आवरणों से आत्म बल दबा हुआ है। जब आत्म शक्ति अपने शुद्ध

Scanned with CamScanner

रूप से उदय होगी, तभी कर्मवीर कर्म क्षेत्र में कुशल हो सकते हैं। पवित्र आत्म बल उदय होने के लिये एक मात्र उपाय अध्यात्म विद्या का प्रकाश है, आध्यात्मिक जीवन है। इसलिये संसार कर्म क्षेत्र में कर्म करने के लिये सर्व लोग अध्यात्म क्षेत्र में आकर कर्म करने की शक्ति का सम्पादन करें। अन्यथा उत्तम जीवन न होगा, न कर्म कुशल होंगे।

५-- परिपक्व सिद्धान्त अटल तथा मुख्य, गौण कर्तव्य।

मानव जीवन महान् है। सर्व कर्म उसी के आश्रय है। इसलिये अपने विवेक तत्त्व सिद्धान्त को परिपक्व कर लेना चाहिये, जिससे कोई नास्तिक अपने जीवन को परिवर्तन कर नष्ट न कर दे। ऐसा अटल सिद्धान्त बनाकर विश्व में अभय रहना चाहिये, जो सामने आँख उठाकर न देख सके। साधारण ढुलमुल जीवन निन्दनीय है। अतः उत्तम जीवन में रहना चाहिये।

मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य ब्रह्म प्राप्ति, त्रयताप दुःख की निवृत्ति और परमानन्द की उपलब्धि है, सो सद्गुरु द्वारा अध्यात्म विद्या के प्रकाश में होती है। इसलिये आप लोग सद्गुरु खोजें और शरण लें।

गौण कर्तव्य रोटी-धोती, कुटुम्ब का पालन-पोषण तथा देश, जाति, समाज की सेवा एवं राष्ट्र की सेवा और विश्व की सेवा करना है। जो विद्वान् अपने मुख्य और गौण इन दोनों कर्तव्यों को जानता है और उसी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है, वही विद्या पढ़ा है और वही पूर्ण विद्वान् है, अन्यन विद्या है, न कोई विद्वान् है। इसलिये विद्यार्थी वृन्द इस अमृत उपदेश की ओर ध्यान देंगे।

Scanned with CamScanner

६--- विवेक, धैर्य तथा शान्ति से सब काम करें।

किसी क्षेत्र में मनुष्य को प्रवेश करना है, उसके पूर्व ही उस क्षेत्र के समस्त कर्मों की जानकारी कर लेवें, क्योंकि ज्ञान के पीछे कर्म होता है। विवेक से अपने काम को अच्छी तरह जान लें तत्पश्चात् कर्म करें। विवेक के बाद धैर्य की आवश्यकता पड़ती है। बिना धैर्य के कोई काम नहीं होता है। धैर्य के आधार पर ही विवेक तथा शान्ति काम करती है, अन्यथा वे दोनों कमजोर पड़ जाते हैं। तीनों मिलकर किसी भी क्षेत्र में अपने कर्म को पूर्ण सफलीभूत करने के लिये वे समर्थ होते हैं। विवेक, धैर्य तथा शान्ति से सम्पन्न कर्त्ता समस्त कर्म पूर्ण कर सकता है वा करता है। इसलिये आप लोग विवेक तथा धैर्य एवं शान्ति से सर्व कामों को करें। इनसे आपके सर्व काम सिद्ध होंगे और जीवन उज्ज्वल होगा।

७--- कर्मयोग और ज्ञान योग

जीव ब्रह्म से मिलने को योग कहते हैं। जिससे जीव ब्रह्म का मिलन हो, वह योग है। चित्त वृत्ति के निरोध को भी योग कहते हैं। चित्त वृत्तियों को प्रथम निरोध करके ही अपने पवित्र ज्ञान को अपने शुद्ध चेतन रूप में संचित करेंगे। यह बहिरङ्ग वृत्तियें नहीं होंगी। जब निज चेतन ज्ञान अपने शुद्ध रूप में स्थित, शान्त होगा, तभी आत्म साक्षात्कार होगा, ऐसे नहीं। आत्म साक्षात्कार होने पर ही सद्गुरु रहस्य योग युक्ति द्वारा आत्मा के अन्तर ही परमात्मा का साक्षात्कार, अनुभव होता है। यही योग का क्रम है। कर्म योग तथा ज्ञानयोग ये दो प्रकार के योग होते हैं। कितने लोगों का विचार है कि कर्म से ही योग हो जाता है। तुम कर्म करो। आपे आप योग हो

Scanned with CamScanner

जायगा। सो नितान्त भूल है, लड़कपन है, नासमझी है। कर्म से योग नहीं होता, न आज तक किसी को हुआ है, न होगा। कर्म योग का अभिप्राय है– कर्म के साथ-साथ कर्म करते हुए योग कर्म योग है अर्थात् आप लोग संसार व्यवहार के कर्म भी करें और साथ ही साथ योगाभ्यास भी करें। इसी का नाम कर्म योग है, कर्म से योग होगा, यह बात नहीं है। यह भूल है।

लोक संग्रह, संसार के कर्म नहीं करते, ज्ञान से ही योग होता है। ज्ञानयोग वीतरागी, विरक्त लोग करते हैं। उनको लोक कर्मों से कुछ मतलब नहीं रहता। वह त्यागी पुरुष केवल ज्ञान लेकर रहते हैं। ज्ञान में ही मस्त रहते हैं। उनके श्वाँस-उश्वाँस में ज्ञानयोग होते रहता है। यह गोपनीय विद्या सद्गुरु रहस्य कला है। इसको गुरुमुख संत लोग जानते हैं और वही प्रभु - प्राप्ति, जीवन्मुक्ति के अधिकारी हैं। वही नर जीवन को सफल करते हैं। कर्म योगी कर्म के साथ-साथ योग करते हैं और ज्ञानयोगी कर्म का त्याग कर, केवल ज्ञान से ही ज्ञानयोग करते हैं। उनका अन्तर से चेतन-चेतन योग चलता है। वह प्रभु प्राप्ति कर कृत्कृत्य होते हैं, यह उपदेश है।

८--- स्वावलम्बन

हे विद्यार्थियो ! तुम लोग स्वावलम्बन सीखो। अर्थात् अपना आधार आप ही हैं। दूसरों के कन्धे पर चढ़ कर नहीं चलते हैं, बल्कि अपने पग पर आप चलते हैं। अपना भार अपने पग पर है। भाव यह है कि राष्ट्र में प्रत्येक मनुष्य काम करे तथा अपनी कमाई आप भोजन करे तथा अपने कामों में आप व्यय करे। दूसरों की कमाई कोई न ले, न उसको भोगे। तब उस अवस्था में इस राष्ट्र की दरिद्रता देश को छोड़कर बाहर चली जायेगी और देश धन-धान्य शाली

Scanned with CamScanner

होकर समृद्धि को प्राप्त हो जायेगा, देश में कोई दुखी न रहेगा। सब सुखी हो जायेगा। यही स्वावलम्बन है। इसी का नाम स्वतन्त्र जीवन है। सब काम करें और सब खायँ। बेकार मनुष्य राष्ट्र में न रहने पावे, राष्ट्र का ऐसा नियम हो।

६-- आत्म स्वाभिमान

जीता, जागता, प्रबुद्ध आत्मा में आत्म स्वाभिमान होता है। अनन्त सत्ता के प्रकाश में अपने व्यक्तित्व के अनुसार सबमें स्वाभिमान होना चाहिये। इसका सबमें विवेक हो। मनुष्य में आत्म स्वाभिमान उत्तम गुण है। किसी महान् आत्माओं में होता है, जो जग विख्यात, जगपूज्य हैं। आत्म स्वाभिमान की दृष्टि में कोई भी किसी को दुख न दे सकता है। वह महान् आत्मा समस्त प्राणियों को सुख-शान्ति की भूमि में देखना चाहते हैं। कोई दुखी दृष्टिगोचर नहीं होता। सब अपने भाव में प्रसन्न चित्त हैं। आत्म स्वाभिमानी पुरुष को विश्व में कोई नीचे न दिखा सकता है, क्योंकि वह अनन्त सत्ता सम्पन्न भगवान के नियम मर्यादा को जानते हैं, समझते हैं। एक दूसरा मायिक स्वाभिमान भी होता है --देश अभिमान,जातीय अभिमान, समाज अभिमान, धर्म अभिमान, विद्या अभिमान, उच्च किसी पद का अभिमान होते हैं। यह भी एक उत्तम गुण है। स्वाभिमान से ही सर्व पदार्थों की तथा सर्व पदों की रक्षा होती है, अन्यथा रक्षा नहीं होती ,न हो सकती है। झूठा अभिमान बुरा है, दोष है, निन्दनीय है। सच्चा अभिमान तो ठीक ही है। यह तो होना ही चाहिये। यह न होने से सर्व सत्ता नष्ट हो जाती है। सर्व विद्यार्थियों को सर्व तत्त्व तथा सर्व विषय जानना चाहिये। वे सब उत्तम-उत्तम विद्यायें, गुण तथा उत्तम

Scanned with CamScanner

स्वभाव एवं उत्तम गौरव और उच्च पदाधिकारी होकर संसार में उत्तम जीवन से सुशोभित होकर रहें, यह उपदेश है।

१०--- देश-सेवा तथा विश्व-सेवा

जो लोक में बड़े हुए हैं तथा लोक प्रिय हुए हैं, वे सेवा करके हुए हैं। इसलिये सेवा प्रधान धर्म है। तुम सेवा सीखो प्रथम ग्राम की सेवा करो, पीछे जिला की सेवा करो तत्पश्चात् प्रान्त की सेवा करो। प्रान्त - सेवा में कुशल होकर तुम राष्ट्र की सेवा करो। राष्ट्र की सेवा करते-करते जब तुम निःस्वार्थ परमाराध्य का स्वरूप बन जाओगे, तब तुम विश्व की सेवा करने योग्य बन जाओगे। उस अवस्था में तुम्हारा विश्व-बंधुत्व का भाव आ जायगा। तुम सबको अपना समझने लगोगे। सर्व राष्ट्र के मानव मेरा परिवार है। भिन्न स्थानों में बसे हुए हैं। सब मेरे हैं और मैं सबका हूँ। उच्च भाव में तुम विश्व की सेवा करने के अधिकारी होगे और विश्व-सेवा करोगे। सेवा से गुरु तथा भगवान सब प्रसन्न होते हैं।

११--- उत्तम मृत्यु

इस संसार में जन्म लेकर कौन नहीं मरता है ? सभी मर जाते हैं। मनुष्यों की मृत्यु कई दशा में होती है, किन्तु उत्तम मरण तो कुछ और ही है। एक वीर महारथी अपने पराक्रम की ज्योति प्रकट कर रण क्षेत्र में रण-शक्ति की प्रचण्ड धधकती हुई ज्वाला में अपने को स्वाहा कर दिया। एक यह उत्तम मृत्यु है। इसी को इस प्रकार कहते हैं। बारह वर्ष की अवधूती और क्षण भर की राजपूती दोनों समान ही

Scanned with CamScanner

होती है। यह क्षत्रियों के क्षात्र धर्म का आदर्श है। आज तो अनेक नये क्षत्रिय निकल रहे हैं, किन्तु वास्तव में क्षत्रिय नहीं हैं, जैसा कि कहा गया है। एक उत्तम मरण वह योद्धाओं का है, दूसरा उत्तम, परम उत्तम मरण योगियों का है जो देखते हुए मरता है। रोगग्रसित विवश हो काल के गाल में तो सभी हैं जाते, पर योगियों का मरण महान् आश्चर्यमय होता है। योगी अपने इच्छानुसार अपने शरीर को छोड़ते हैं। योगी जब तक चाहते हैं अपनी पार्थिव देह को संसार में रखते हैं एवं महाप्रलय तक अपनी देह को रख सकते हैं और रखते हैं। आप किसी कमरे में हैं। दरवाजे से बाहर निकलते हैं। आपके सामने दो तो है, मन्दिर में हैं, सो भी है, मन्दिर से बाहर आ गये, सो भी है। आप दोनों को देखते हैं। उसी प्रकार समाधिस्थ जीवन्मुक्त योगी देह में हैं, तभी अपने को देखते हैं कि मैं कहाँ पर हूँ। गगन द्वार होकर जब मन्दिर से बाहर निकलते हैं, तभी अपने को देखते हैं कि मैं बाहर निकल रहा हूँ। मन्दिर से बाहर हैं, तभी देखते हैं कि यही शरीर है कि मैं जिसमें रहता था, आज बाहर आ गया हूँ। इस प्रकार योगी अपनी मृत्यु को अपनी आँखों से देखता हुआ तथा हंसता हुआ मरता है, जो संसार के लिये दुर्लभ है और योगियों के लिये एक क्रीड़ा मात्र है। सबसे उत्तम मृत्यु योगियों की है, जो आनन्दमय है। वह योगी धन्य है। उनकी जीवन शक्ति दुर्लभ है।

विद्यार्थियो! तुम ऐसा प्रयास करो कि तुम्हारा मरण उत्तम हो। कीट-पतंग की मृत्यु तो रोज ही होती रहती है। कुत्ते के समान मरण अच्छा नहीं है, बल्कि योगियों की स्वच्छन्द मृत्यु सुन्दर, अच्छी है। मनुष्य के पुरुषार्थ से सब कुछ हो सकता है और होता है।

।।इति पञ्चम पाठःसमाप्तः।।

Scanned with CamScanner

अथषष्ठः पाठः प्रारम्भः

१--- आत्म बल संयम

आत्म बल सर्व श्रेष्ठ बल है, जिसके द्वारा अपूर्व बड़े से बड़े भी कार्य किये जाते हैं। एक आत्म बलशाली पुरुष सहस्रों विद्वानों से भी अधिक काम एकाकी कर सकता है। इसलिये विद्यार्थी वृन्द! विद्याध्ययन के साथ-साथ आत्म बल के लिये भी प्रयत्नशील हों। जो काम शारीरिक शक्ति तथा मानसिक शक्ति के द्वारा एवं बौद्धिक शक्ति के द्वारा नहीं हो सकता है, वह काम आत्मिक शक्ति के द्वारा सरलता से होता है। अतः सब लोग आत्म बल के लिये योग संयम करें। योग संयम गुरु प्रसाद से होता है और गुरु भक्त करते हैं, सर्व साधारण का विषय नहीं है।

२--- बौद्धिक बल संयम

इस शरीर में अन्तःकरणों में बुद्धि एक श्रेष्ठ करण है। बुद्धि के द्वारा ही देह का संचालन होता है। ग्रहण शक्ति तथा धारण शक्ति एवं स्मरण शक्ति बुद्धि को ही है। यह बुद्धि का ही काम है। जिस मनुष्य में विद्या है, बुद्धि नहीं है, वह बुद्धिहीन विद्याबलहीन हो जाता है। बुद्धि से ही विद्या का प्रकाश है। जहाँ पर बुद्धि नहीं है, वहाँ विद्या कुछ काम नहीं देती। विद्या के साथ-साथ बुद्धि की बड़ी आवश्यकता है। विद्या और बुद्धि एक साथ हो, इसी में मंगल है। बुद्धिमान ही राजमन्त्री होते हैं। बुद्धिमान ही सेनापति होते हैं। बुद्धिमान ही नेता होते हैं और बुद्धिमान नर राष्ट्रपति होते हैं। इसलिये

Scanned with CamScanner

हे विद्यार्थियो ! तुम अपनी विद्या के साथ अपनी बुद्धि का विकास करो और बुद्धि को उन्नति की चरम सीमा पर ले चलो।

दार्शनिक परिभाषा में बुद्धि, ज्ञान, प्रकाश ये पर्याय शब्द हैं, यह एक ही अर्थ वाचक हैं।

(१) गुरु युक्ति विधान द्वारा बाहर ब्रह्म में ध्यान-चिन्तन करने से प्रकाश का आवरण क्षय होता है और महान् दिव्य बुद्धि प्रगट होती है, जिसके समान विश्व में अन्य कोई बुद्धिमान नहीं हो सकता है, वह विश्व में अद्वितीय बुद्धिमान होता है और वह अपनी बुद्धि को विश्व-उपकार में लगाता है।

(२) योग युक्ति से प्राणायाम करने से भी प्रकाश का आवरण क्षय होता है किन्तु प्रथम अभ्यास सर्वश्रेष्ठ,सर्व मान्य है। भाव यह है कि प्राणायाम से भी बुद्धि बढ़ती है तथा बुद्धि का विकास होता है।

(३) ब्राह्मी बूटी का संयम से, नियम पूर्वक सेवन करने से बुद्धि प्रखर होती है तथा महान् होती है। ब्राह्मी बूटी के समान बुद्धि वर्धक बूटी अन्य वेदों नहीं आई है। ब्राह्मी सर्व प्रधान है।

(४) हिमालय वच के सेवन से भी बुद्धि शीघ्र बढ़ने लगती है। गो-दुग्ध के साथ इसका सेवन करें।

(५) ब्राह्मी बूटी का महाकल्प भी होता है। इस ब्राह्मी महाकल्प के द्वारा पाँच सौ वर्ष यह पार्थिव देह इस संसार में रहती है। मूर्तिमान होकर सरस्वती उसके घट में वास करती है। ब्राह्मी महाकल्प करने वाला व्यक्ति चारों वेद आपे आप पढ़ सकता है।

Scanned with CamScanner

उसको वेद पढ़ने के लिये गुरु की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इस ब्राह्मी महाकल्प को मैंने हिमालय में अपने आश्रम पर किया है। इसका ज्ञान, अनुभूति है एवं प्रत्यक्ष है। यही सब बुद्धि का संयम है। इस प्रयोग से बुद्धि महान् होती है ; पर विद्यार्थियों के ध्यान में रखने योग्य एक यह बात है कि बुद्धि के लिये ब्रह्मचर्य प्रधान साधन है। ब्रह्मचर्य भ्रष्ट वीर्यहीन व्यक्ति से कुछ भी नहीं होता, न होगा। अतः आप लोग ब्रह्मचर्य का पालन करें और बुद्धिमान बनें।

३--- मानसिक बल

मन की गति निरोध करने से मन बलवान होता है। योगाभ्यास कर प्रथम मन पर अपना आधिपत्य जमा लें। वशीभूत मन बलशाली होकर आत्मा के अधिकार में चलता है। बारम्बार मानसिक उपचार करने से मानसिक ध्येय सफलीभूत होता है। मानसिक शक्ति होने से संसार कर्म क्षेत्र में बड़ी सफलता प्राप्त होती है। इसलिये विवेकी विद्वान् मानंसिक बल प्राप्त होने के लिये मन का साधन करते हैं। आत्म उत्थान के लिये मन का साधन करते हैं। आत्मोत्थान के लिये मन को शान्त करना प्रथम साधन है। विद्यार्थी कम से कम २० ३० मिनट दोनों काल योगाभ्यास करें। समय से योगाभ्यास करने से बुद्धि तथा विद्या बढ़ेगी और आत्म उत्थान होगा, जो काम शरीर से नहीं हो सकता, वह काम मानसिक शक्ति द्वारा शीघ्र, अतिशीघ्र होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

४-- दैहिक बल संयम

एक अर्थ में धारणा, ध्यान और समाधि का होना संयम है। जिसके बल में संयम होगा, उसका बल प्राप्त होगा, जैसे हाथी, घोड़ा, शेर आदि का। वीर्य्य ही बल है। जहाँ वीर्य्य है, वहीं बल है। इसलिये देह बल के इच्छुक पुरुष ब्रह्मचर्य्य का पालन करें। गो का दूध, घी, सेब, बीजदाना, बादाम आदि फल बलवर्द्धक हैं। आप सदैव स्वस्थ रहें। संयम से रहने से, जैसे भोजन,शयन, मलमूत्र का त्याग नियम समय से होने से तथा शारीरिक क्रिया का नियम से निर्वाह होने से मनुष्य स्वस्थ रहता है। सूर्य्य के सामने आसन, प्राणायाम, मुद्रा आदि आप नियम से किया करें। इससे पठन-पाठन में बाधा न होगी, बल्कि अपार लाभ होगा और इससे दैहिक बल प्राप्त होगा।

५--- विविध कल्प

भारत में ऋषियों का कल्प प्रयोग था, जो आज लुप्त रूप में है, कारण कि इसका कोई गुरु नहीं है, न इन कल्प प्रयोगों के करने वाले कोई धीर विवेकी पुरुष ही हैं। कल्प प्रयोगों से जीवन आयु दीर्घ होती है। बल बुद्धि अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है, जैसा कि सर्व साधारण लोगों में नहीं हो सकता है। सौ वर्ष का कल्प है, तीन सौ वर्ष का कल्प है, पाँच सौ वर्ष का कल्प है। आठ सौ वर्ष का कल्प है। दस हजार वर्ष का महाकल्प है। एक लाख वर्ष जीवन धारण कर सके, ऐसा भी महाकल्प है। इन कल्प प्रयोगों का प्रभाव सत्य, निर्भ्रान्त है कारण कि मैं स्वयं एक सौ वर्ष का कल्प किया हूँ और पाच सौ वर्ष देह संसार में रह सके, इस कल्प को भी मैंने हिमालय में अपने आश्रम पर किया है। इससे यह सत्य, अनुभूत ज्ञान है, कागजी ज्ञान नहीं है। ऋषियों की सभी विद्यायें तथा ज्ञान-विज्ञान

Scanned with CamScanner

सत्य, निर्भ्रान्त हैं, उनमें अगर-मगर लगाने वाले विमूढ़ हैं। वे नहीं जानते। वे निम्न कोटि के मनुष्य हैं। आप लोग कोई छोटा प्रयोग को कर के देखें।

६--- मुण्डी संयम

मुंडी में भी अधिक लाभ की चीज है और इसका संयम भी सहल है। विद्यार्थी पठन-पाठन के साथ-साथ भी मुंडी का संयम कर सकते हैं। मुंडी सेवन से रक्त खूब बढ़ता है। मोटा तगड़ा शरीर हो जाता है। बल-वीर्य-जीवन शक्ति भी बढ़ती है। केश काले हो चलते हैं। केवल दाढ़ी-मूँछ सफेद रहती है। मैं मुंडी बूटी का बराबर सेवन करता हूँ। मैं इससे प्रसन्न रहता हूँ। यह सहज बूटी अच्छी है। शरीर स्वस्थ रहेगा, तभी मनुष्य विद्वान् तथा बुद्धिमान रह सकता है, अन्यथा जीवन भार-सा हो जाता है। अतः आप अपने शरीर, स्वास्थ्य को अच्छा, सुन्दर बना रखें।

७--- चक्षु का व्यायाम

प्रातः सायं काल सूर्य्य के सामने सूर्य्य की अमृत सप्त किरणों में चक्षु का व्यायाम करें।

(१) प्रथम प्रयोग-चक्षु-दृष्टि ऊपर नीचे गिन कर पचास बार करें, फिर चक्षु को बायें, दाहिने दिशा को फेरें पचास बार।

(२) सूर्य्य के सामने आगे पचास बार चक्षु को दाहिने से बायें को घुमायें फिर बायें से पचास बार दाहिने को घुमावें

(३)

Scanned with CamScanner

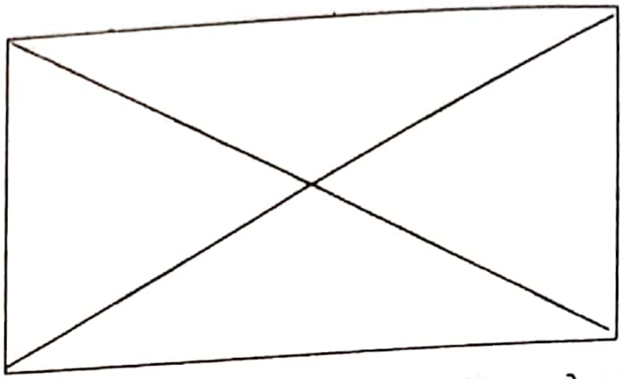

चक्षु को जल्दी-जल्दी रेखा के जोड़ों पर दौड़ावें फिर जल्दी - जल्दी रेखा के कोनों पर फेरें

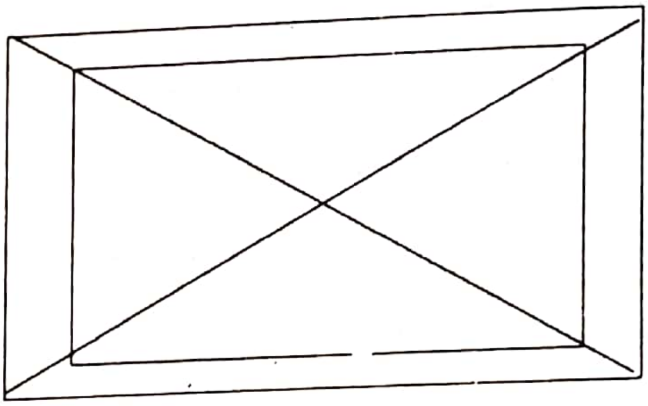

(४) चक्षु का परदा बन्दकर पाँच मिनट तक सूर्य्य की ओर दृष्टि करें, सूर्य्य को देखें। यह सूर्य्य का प्रयोग और चक्षु का व्यायाम है। मैं देखता हूँ कितने विद्यार्थियों की आँख की ज्योति मन्द हो जाती है। कम सूझता है। वे चश्मा लगाने लगते हैं, चश्मा लगाने से चक्षु का प्राकृतिक विकास रुक जाता है एवं आगे शक्ति नहीं बढ़ती। इसलिये नवयुवकों को चश्मा कदापि नहीं लगाना चाहिये। अंग्रेजी डाक्टरों की राय से राष्ट्र की बड़ी क्षति हो रही है।

अंग्रेजी डाक्टरों ने मुझे भी चश्मा लगाने की राय दी थी। अधिक पैसे का चश्मा भी आ गया। मैं लगाने भी लगा। फिर भाव यह उदय हुआ कि जो मेरी निजी चक्षु की शक्ति है, जो प्राकृतिक नियम से बढ़ेगी, वह भी चश्मा से कमजोर हो रही है। मैंने चश्मा को

उतार फेंका। अब बिना चश्मा के पढ़ते-लिखते हैं। विद्यार्थी चश्मा को हटावें और मेरे बताये हुए प्रयोग को करें। इससे बड़ा लाभ होगा और होता है। आँख सुधर जाती है और अपने पूर्व रूप में आ जाती है। यह अमृत उपदेश है।

८--- सूर्य्य संयम

सूर्य्य में संयम करने से भुवन का ज्ञान होता है। यह तो योग विभूति है। इसके लिये बड़ा जीवन चाहिये, तब होता है। विद्वान् पुरुष अपने प्रयोगों द्वारा सूर्य्य की शक्ति अपने में ले सकता है। सूर्य्य की शक्ति अपने में अवतरित होती है, होगी। सूर्य्य से विश्व विजयी महातेज, महाबल तथा महाप्रताप और महा व्यक्तित्व, विज्ञानवेत्ता अपने प्रयोगों द्वारा लेता है। इससे संसार क्षेत्र में बड़ा लाभ होता है। १५-१५ मिनट दोनों काल सूर्य्य के सामने इसका प्रयोग आप करें। आपमें जीवन शक्ति आयेगी। अनुभव होगा।

९--- प्राणायाम

विद्यार्थियों को दोनों काल प्राणायाम अवश्य करना चाहिये। आप प्राणायाम किसी योगी से सीखें। अपने मन से न करें। नियम पूर्वक प्राणायाम करने से विद्या और बुद्धि दोनों बढ़ती है। आप मूल बंध तथा शक्ति चालिनी मुद्रा को करने के पश्चात् कपाल भाती प्राणायाम अवश्य करें। पीछे विपरीत करणी मुद्रा को करके वायु शुद्ध करें। इन सब क्रियाओं से विद्यार्थियों को बड़ा लाभ होगा। बुद्धि प्रखर होगी तथा बुद्धि का विकास होगा। मानसिक शक्ति बढ़ेगी तथा देह से आप स्वस्थ रहेंगे, बलवान रहेंगे। आप सभी जीवन का लक्ष्य

Scanned with CamScanner

पूरा कर सकेंगे, आगे गुरु प्रसाद से सब होता है। विद्यार्थियों को उचित है कि विद्वान् योगी का सत्संग भी किया करें। इससे अधिक लाभ होगा, सन्तसेवा से विद्या प्राप्त होती है।

१०--- ब्रह्म चिन्तन तथा ब्रह्म प्राप्ति

मनुष्यों का जीवन-सार प्रभुभजन है। बाल-वृद्ध, युवा नर-नारी सबको भजन के लिये समान अधिकार है। ब्राह्म मुहूर्त में और शाम, सबेर योगाभ्यास करें। प्रथम ब्रह्म का चिन्तन, सुमिरन करें, गुरु विधान, योग युक्ति द्वारा जब कुण्डलिनी मार्ग त्याग कर अलग हट जाय, ब्रह्म नाड़ी सुष्मना खुल जाय अर्थात् सुष्मन प्रवाह हो जाय, तब गुरु-भक्त गुरु-प्रसाद से गगन मण्डल की चढ़ाई करें एवं समाधिस्थ जीवन्मुक्त होकर परमानन्द का उपभोग करें। योगीश्वरों का यही परम पुरुषार्थ है और नर-जीवन की कृतकृत्यता है।

।।इति षष्ठः पाठः समाप्तः।।

आश्विन शुक्ल -- १०, सं. २००६ वि.

----------|----------

Scanned with CamScanner

स्वामी, प्रकाशक तथा मुद्रक

आचार्य श्री स्वतन्त्र देव जी महाराज

द्वारा सुकृत ऑफसेट प्रेस, महर्षि बाग, गंगातट, झूँसी (प्रयाग), इलाहाबाद (उ. प्र.) में मुद्रित तथा सद्गुरु सदाफल देव विहंगम योग संस्थान, पराविद्या योग आश्रम वृत्तिकूट, पकड़ी, बलिया (उ.प्र.) में प्रकाशित

प्रधान सम्पादक आचार्य श्री स्वतन्त्र देव जी महाराज

दूरभाष -- ०५३२-८७२२६५

Scanned with CamScanner